

---

Printed at Shri " Satyavijaya P. Press "  
Ahmedabad by Sankalchand Harilal Shah.

---

## ॥ प्रस्तावना ॥

गाथा—नाणस्तु सव्वत्त पणासणाय ।  
अत्राण मोहस्तु विवज्जणाय ॥  
रागस्तु दोसस्तु ये संखणाय ।  
एकंत तोख्वं समुवेश मोख्वं ॥

श्री उत्तराख्ययन. वं. ०

ज्ञान सर्व स्थानमें प्रकाशका करने वाला है, अज्ञान और मोह रूप अन्धकारका नाश करने वाला है, रागद्वेष रूप रोगका विध्वंस करने वाला है, और एकान्त अमिश्र अनुपम मोक्ष सुखका दाता है.

इमलिये सुखेच्छु प्राणियोंको अभिनव ज्ञानका पयन मनन और निश्चिन्ता करनेकी बहुत ही आवश्यकता है. प्राचीन कालमें केवल-ज्ञानी तथा महा प्रज्ञा ( बुद्धि ) वंन सत्पुरुषों अनेक



दिको पढ़ना, श्रवण करना और दूसरोंको पढ़ाना, यह उत्तम जनोंका कर्त्तव्य है. इसलिये चंद स्तवन वेगेरा जोकि कविवर मुनि श्री हीरालालजी महाराजके बनाये हुवेथे, उनको संग्रह कर शुद्ध करके भव्य जीवोंके हितार्थ पठन करने योग्य जाण प्रथम ' श्री जैन सुवोध हीरावली ' नामक ग्रंथकी १००० प्रति छपवाकर श्री संघको अमूल्य अर्पण कीथी, जोकि सर्व प्रिय होनेसे थोड़ीही दिनोंमें सब वितर्ण (खर्च) हो गई.

उसी अपेक्षासे यह ' श्री जैन सुवोध रत्नावली ' नामक ग्रंथ कविवर मुनि श्री हीरालालजी महाराज रचितको शुद्ध करके १००० प्रति श्री संघकी सेवामें भेंट करके कृतार्थ होते हैं.

चार कमान  
 म्हा. हैद्राबाद (दक्षिण)  
 कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा

श्री संघके सेवक.

पंन्नालाल जमनालाल  
 रामलाल किमती.



चन्द्रजीको प्रवल असरकारक हुवा, और तूर्त पत्नी पुत्र परिवारकी आज्ञा संपादन कर संवत् १९१४ के ज्येष्ठ शुक्ल पंचमीको अपने साले देवी-लालजीके साथ दिक्षा अंगिकार की. गुरुभक्ति कर ज्ञानके प्रेमी बने, और शांत दांत क्षांत शुद्धाचारी होकर जिनशासनको प्रदत्त करने लगे. ग्रामानुग्राम उग्र विहार करते हुवे संसारी कुटुम्ब उद्धारार्थ, संवत् १९२० में पुनः कंजरहा ग्राममें पधारे और सदुपदेशसे पत्नी और तीनही पुत्रों को वैरागी बनाये. प्रथम राजावाईने आज्ञा देतीनों पुत्रोंको सहर्ष दिक्षा दिलाई, और फिर आपने भी महासतीजी श्री रंगूजीके पास दिक्षा धारण की. फिर ये सब गुरु और गुरुर्णीजीकी भक्ति करते हुवे यथाशक्ति ज्ञान संपादन करते हुवे विशुद्ध तपसंयमसे अपनी आत्मा



# श्री जैन सुबोध रत्नावलीकी अनुक्रमणिका.

वैषयांक. विषय.	पृष्ठांक.	भागवती वषाईका	
प्रस्तावना.	३	स्तवन.	१४
ग्रंथकर्ताका संक्षिप्त		८ श्री जिनवाणी स्त-	
जीवन चरित्र.	६	वन-चमंत होली.	१५
१ मंगला धरणम्-आरती.?		९ श्री महावीरस्वामीका	
२ श्री शान्तिनाथजीकी		मंगलस्तवन-लावणी.?	१६
छावणी.	३	१० श्रीवीर भभुंक. दर्श-	
३ श्री महावीरस्वामी-		नवा उत्साह-स्तवन	१७
का स्तवन-महाद.	५	११ श्रीनवदशमंत्र स्तवन.?	१९
४ श्री नेमीनाथजीका		१२ गुरुगुण स्तवन-महाद.	२१
स्तवन.	७	१३ श्री जिनराजमे वि-	
५ श्री नेमीनाथजीका		नती स्तवन-गण्ड	
स्तवन.	१०	कच्वाली.	२३
६ श्री महावीर स्वामी-		१४ श्री जिनवाणी स्तवन.	२५
का स्तवन.	१०	१५ माधु गुण स्तवन-	
७ श्री ऋषभदेवजी के		चमंत होली	१७





- ४३ पद—शिक्षाकित्सेलेग? ७३  
 ४४ विनयका पद. ७५  
 ४५ पद—वैतन्व्य प्रदेशीका. ७९  
 ४६ पद—आत्म ध्यान. ८०  
 ४७ पद—समता गुणदर्शक. ८१  
 ४८ पद—निंदा दुर्गुण. ८२  
 ४९ पद—कलियुग दर्शक-  
 होली. ८४  
 ५० पद—जरा गुण दर्शक. ८५  
 ५१ पद—मनको सद्बोध. ८६  
 ५२ पद—अभिमानी के  
 लक्षण—महाड. ८८  
 ५३ महमदी फरमान—  
 गजल कव्वाली, ८९  
 ५४ पद—अनित्यता  
 दर्शक—टुमरी. ९१  
 ५५ जक्त जाल दर्शक. ९२  
 ५६ पद—धारी नही होवे ९२  
 ५७ उपदेशी लावणी. ९३  
 ५८ लावणी उपदेशी. ९५  
 ५९ पद—बहु मे अर्जी. ९७  
 ६० लावणी त्रया वाच्य ९८
- ॥ चरित्रावली ॥  
 ६१ भरत बाहुबल चरित्र  
 लावणी. १००  
 ६२ लावणी—बाहुबल-  
 जीको ब्राह्मी सुदरी  
 जीका सद्बोध. १०३  
 ॥ हरिवंश चरित्रावली ॥  
 ६३ कृष्णलीला. १०६  
 ६४ जीव जसाका एवता  
 ऋषिसे सवाल. १०९  
 ६५ एवता ऋषिका जीव  
 जसासे जवाब. ११०  
 ६६ जीव जसा जार केश  
 राजाका विचार. १११  
 ६७ छे भाइ साधुका  
 वर्णन—लावणी. ११३  
 ६८ पद—श्रीपदीका सत्य. ११७  
 ६९ पद—कृष्णविलाप. ११९  
 । गम चरित्र ॥  
 ७० मीना हरण-जटाड  
 अर्द्धाङ्ग १२१  
 ७१ मीनाजीमे भवि-



घणणण घणणण घणकारं ॥ जय ॥ ५ ॥

गज रथ तुरंगा सजी सुरंगा;

अति उमंगा भोपालं ॥ प्र० अति० ॥

सन्मुख आवे, शीस नमावे;

गुण गावे अति उज्वालं ॥ जय ॥ ६ ॥

सदा सुरंगं, उडुपति खंगं,

जीते जंगं वरदानी ॥ प्रभू० जीते० ॥

वपु ' हीरालालं, ' करो प्रतिपालं,

दयालं मम हित आनी ॥ जय ॥ ७ ॥

---

॥ श्री शांतीनाथजीकी लावणी ॥

श्री शांतीनाथ महाराज अर्ज सुणो मेरी ।

तुम शांती करण जिनगज सगण आयो तेरी ॥ आं० ॥

यह स्वार्थ मिळ विमाण मे चक्कर आया ।

दुर्भानापुर्ग नगमें जन्म लियो जिनगय ।



सुत्रकी वाणी सुणकर जोर लगाया ।

करी पचरंगी प्रमुख तपस्या भाया ।

कहे 'हीरालाल' दया धर्म मोक्षकी सेरी ॥ तुम ॥ १ ॥

॥ श्री महावीर श्वामीका स्तवन ॥ महाड राग ॥

सुरांगना गावे मङ्गलाचार, दैवांगना गावे

मङ्गलाचार ॥ आं ॥

उर्ध्व अधोगति धकीरे । तिर्धकर पद पाय ॥

जननी स्वप्ना देखिया कांइ । दिग वेण दोर्नो

मिलाय ॥ सु ॥ १ ॥

छप्पन कुंवारी सब सिणगारी । गावे मिलर गीत ॥

रति करे आप आपणी कांइ । पूर्ण प्रभकी

प्रीति ॥ सु ॥ २ ॥

इन्द्र इन्द्राणी आवियारे । नर नार्याका वृंद ॥

जन्म भवने जिनराजको । और जननी को-

नमत आनन्द ॥ सु ॥ ३ ॥



॥ श्रीनेमी नाथजीका स्तवन ॥ नागजीकी देशीमें ॥

नेमजी, यादव वंशमें ऊपनाहो प्रभू ।

सूर्य सरीखा दीपता हो नेमजी ॥ १ ॥

नेमजी, समुद्रविजय राजा भलाजी कांड ।

शिवादेवी सुत मलपता हो नेमजी ॥ २ ॥

नेमजी, रमतडी रमता धकाजी प्रभू ।

आयुद्ध शायमें आविया हो नेमजी ॥ ३ ॥

नेमजी, धनुष्य चढाइ शंख पूरियो प्रभू ।

श्रीपत सुण घवराविया हो नेमजी ॥ ४ ॥

नेमजी, अतुल्य बली अवलोकने कइ ।

हरिने हर्ष आयो घणो हो नेमजी ॥ ५ ॥

नेमजी, उग्रसेनकी डीकरीजी कइ ।

राजुलरूप सुहामणो हो नेमजी ॥ ६ ॥

नेमजी, व्याव रूयो रंग अँल्लोको जे ।





- नेमजी, सङ्ग नहीं छोटां तुमतणो प्रभू ।  
नाथ हमार छिवडे वसोहो नेमजी ॥ १५ ॥
- नेमजी, संयम लेइ गिरीवर चटी राजुल ।  
सातसो परिवारख्युं हो नेमजी ॥ १६ ॥
- नेमजी, वर्षा हुइ चीर भीजियाजी कांइ ।  
गिरी गुफामें आविया हो नेमजी ॥ १७ ॥
- नेमजी, वख सुखावा अलगा कियाजी कांइ ।  
दामनी जिम चमकाविया हो नेमजी ॥ १८ ॥
- नेमजी, रहनेमी चित डोलियोजी कांइ ।  
देवरने समझाविया हो नेमजी ॥ १९ ॥
- नेमजी, केवल लेइ मुक्ते गयाजी कांइ ।  
'हीरालाल' गुण गाविया हो नेमजी ॥ २० ॥
- नेमजी, उन्नीमो पेंसट विपेजी कांइ ।  
गट चिनांटे सुख पाविया हो नेमजी ॥ २१ ॥



मिध्यात्वी माने नहींजी ॥ महाराज ॥  
 वल जोवा जिनराज ।  
 स्वर्गसे आया वहीजी ॥ महाराज ॥ ४ ॥  
 लिया नेम कुंवार ।  
 आकाशमें चालियाजी ॥ महाराज ॥  
 प्रभू जोयो अवधि ज्ञान ।  
 वैरीने पाछा वालियाजी ॥ महाराज ॥ ५ ॥  
 दाव्या अंगुठाका हेठ ।  
 अमर अति आरडेजी ॥ महाराज ॥  
 सुरपति आया दौड ।  
 छोड पांवा पडेजी ॥ महाराज ॥ ६ ॥  
 जोयो वलि जिनराज ।  
 आज सुरासुर मिलीजी ॥ महाराज ॥  
 पाछा पालणिये पोढाय ।  
 आया अमगपुरीजी ॥ महाराज ॥ ७ ॥



जन्म लियो प्रभू सत्र सुख पावे ॥ श्री ॥ १ ॥

कंचन वरण शरीर विराजे ।

केहर लंछन चरण कहवावे ॥

दीसे देही सप्त हस्त प्रमाणे ।

दिनकर तेज जिम दीपावे ॥ श्री ॥ २ ॥

रत्न सिंहासण उपर विराजे ।

छाजे छत्र चमर डुलावे ॥

मनमोहन भामंडल भासत ।

चतुरानन प्रभू दर्श दिखावे ॥ श्री ॥ ३ ॥

नरुतिर्यत्र सुरासुर केइ ।

कोडाकोडी गिणती न आवे ॥

प्रभूसुख जोवे तृप्त न होवे ।

हर्ष २ हियो उमंगावे ॥ श्री ॥ ४ ॥

चरम जिनेश्वर चर्ण युगलको ।

नमतां नवानिध पाप पलावे ॥



घन जिम गाजे अन्वर राजे ।  
प्रभूसुख वाणी रही छवि छाइ ॥ आ ॥ ३ ॥  
प्रथम जिनेश्वर आनन्दकारी ।  
मङ्गल वरते सब दिन ताइ ॥  
कहे ' हीरालाल ' आप विराजा ।  
माताने मुक्तीमे दिया पहुँचाइ ॥ आ ॥ ४ ॥

---

॥ श्री जिनवाणी स्तवन । राग—वसंत—होली ॥  
चली आती है, हांरे चली आती है ।  
वाणी जिनवर गंङ्गा ॥ आं. ॥  
प्रभू मुखसागर वहे अति निर्मळ ।  
गणधर गुणग्रह ऊमङ्गा ॥ च ॥ १ ॥  
द्वादश अङ्गी चङ्गी सरिता ।  
वितर्क अनेक भर्या नगङ्गा ॥ च ॥ २ ॥  
या जिन वाणी दुःख दाह मिटाणी ।





अर्ज करुं जिनराज आपसे । तुम रक्षाके करनेवाले।  
सेवे सुरिंदा तेज दिणंदा । दीपे जिणंदा प्रतिपाले॥  
अक्षय पुण्य कमाया दमकती काया॥ कंचन वरणं-  
देह धरणं ॥ जय ॥ ३ ॥

रवि चन्द्रमा सभी जोतपी । भरा रहे समुद्र पानी ॥  
भूमण्डलअचलजिममेरुतवलगरहोयह जिनवाणी॥  
सदा रहोगुलजार गिरामी।भवश्पातकके हरणं।जय४  
सदा देव गुरु धर्म आपकी।वनी रहो यह गुल कदारी॥  
श्री रत्नचन्दजी महाराज राजके । जवाहरलालजी-  
यशधारी ॥

संवत् उन्नीसो पैंसठ वर्षे । हीरालाल कहे तारण-  
तिरणं ॥ जय ॥ ५ ॥

---

॥ स्वप्न श्रीवीर प्रभूके दर्शनका उत्साह ॥

॥ ह्रीं आजो मंदगिये गंग मानवाने ॥ यह देशी ॥

आला आलागे दर्शन वाहला वीरनारे ॥ ३ ॥



॥ नवकारमंत्र स्तवन॥रावणको समझावे गर्णीदि०  
करे नवकार मंत्रका जाप ।

कट्ट है जन्म २ का पाप ॥ आं० ॥

सबही शान्त्रके दग्म्यान ।

किया नवकारमंत्र व्र्यान ॥

समझलो यही ज्ञान और ध्यान ।

भजन बिन नर है पशू नमान ॥

दोहा—पंचपद परमेश्वरे । वर्ण पैंतीस प्रमाण ॥

अर्हत सिद्ध आचार्य उपाध्याय । साध-

वतावे ज्ञान ॥

दि०—रखो सब दिल अपना तुम साध ॥ कट्ट १५।

अमी होवे जल नमान ।

भूत नहीं लागे जहां स्वशान ॥

गणमें बचावे अपने प्राण ।

जहर में होवे अमृत प्राण ॥



अहो विरादर तुम क्यों भूले । क्यों करते हो वेद ॥  
मिलत-समजलो इसेहीमां और बाप ॥ कटन हो ॥२॥  
चले नहीं कोईकियातोफानाटलेसवग्रहगौचग्मशान ॥  
सवहीविद्यामंत्रदत्तदान । करोनवकारमंत्रकी छान ॥  
दोहा-योही मंत्र त्रिकाल संध्या ॥ होत मनार्थ सिद्ध ॥  
हीरालाल नवकार मंत्रसे । पावांगा बहु रिद्धि ॥  
मिलत-सुणायां ज्ञान गुरुजी आप ॥ कटन हो ॥५॥

गण स्तवन ॥ राग-महाड ॥

री ।

ज ॥ आं० ॥

या ।

पाकर ।

॥ हो गुरु ॥



क्यों होवो जाण अजाण ॥ हो गुरु ॥ ५ ॥

जेनमार्ग दीपक ज्यों देखायो ।

यो मोठो उपकार ॥

हीरालाल नन्दलालको तार्या ।

यो मोठो उपकार ॥ हो गुरु ॥ ६ ॥

---

॥ श्री जिनराजसे विनंती स्तवन ॥

॥ गजल-कव्वाली ॥

बिना जिनराजकी भर्त्स। कभी नहीं मोक्ष पावेगा॥

दयालू दीनके बन्धव । वही जो प्राण बचावेगा। जां।

जिनन्दकी सूखती प्यास । खुली गुलशनकी क्यारी

प्रीति यह लगी है हमारी । प्रभूसे लक्ष लगावेगा ॥

बिना ॥ १ ॥

तुमारे कष्टकी छांया । भग्नमें जापके जाया





दुःख्या दुःख मिश्रवो । जभी आनन्द आवेगा ॥

॥ विना ॥ ७

॥ श्रीजिनवाणी स्तवन ॥ अर्णी भान्दने कण -  
भरमावियो ॥ यह देवी ।

देवी जिनन्द वाणी सुय कामर्णीरे ।

मनेषांलित पूरे हाम ॥ देवी० ॥ आ० ॥

अर्णी देवीनी दर्शन दोहिल्यारे ।

पूर्व कश्चिन होवे पुण्य ॥ देवी ॥ १ ॥

देवी नरे नृपण कर मोहनीरे ।

जिन यावे सूर्य प्रकाश ॥ देवी ॥ २ ॥

देवीनि नरनक सुगत दिवेकनेरे ।

कांठे पारदा गज नवनगर ॥ देवी ॥ ३ ॥

देवी हाथे म्हा निपो ज्ञानकोरे ।

वसु देवे ००० दिशान ॥ देवी ॥ ४ ॥



॥ साधु गुण स्तवन ॥ राग-वसंत-होरी ॥

साधु आयारे भविक जीव तारनको ।

गुरू आयारे भ० ॥ आं० ॥

ज्ञान सुनावे धर्म बतावे ।

क्रोध लोभ परिहारनको ॥ साधु ॥ १ ॥

जन्म मरणका जो फंद मिटावे ।

दुर्गति दूर निवारणको ॥ साधु ॥ २ ॥

पट कायाका जो प्राण बचावे ।

रागद्वेष दोह हारनको ॥ साधु ॥ ३ ॥

पंच इन्द्रीको दमन करावे ।

मान अहंकार मद गारनको ॥ साधु ॥ ४ ॥

करी तन तपस्या जोर लगावे ।

अष्ट कर्मगिणु मारनको ॥ साधु ॥ ५ ॥

स्वर्ग गतिका जो सुख मिलावे ।

दयामार्ग दिनु धारनको ॥ साधु ॥ ६ ॥



एहने अंब जाणीने जल मीत्रियोग ।  
 मोत्रो धावाधी जाण्यो कडवां नीमटोत्रे ॥ज्ञा॥४॥  
 एहने दूध मरीखो जाण्यो उजल्यो ।  
 पात्रो जेवाधी जाण्यो जिम कागल्यो ॥ज्ञा॥५॥  
 जाण्यो हंस मरीखी गती चाल्यो ।  
 ध्यान धावाधी जाण्यो जेहवो वगल्यो ॥ज्ञा॥६॥  
 सुसुहु जाणीने शिष्य मुंडावियोग ।  
 हीसल्यल करे हे हिवडां देगल्यो ॥ज्ञा॥७॥

॥ विहार करते सुनीयजसे विनंती स्तवन ॥

॥ चेतन वेनोरे ॥ यह देखी ॥

वेगा आजोर्जीर महायज सुनीश्वर ।

दग्धन दीजोर्जी ॥ वेगा० ॥ आं० ॥

विहार करेना वाहत्या लगो ।

हृद वेगा दीजोर्जी ॥



लुल २ पांय पटीजोर्जी ॥

दरशन धारा लागे प्याग ।

भोग जोग मिलीजोर्जी ॥ वेगा ॥ ५ ॥

हीरालाल कहे गुरु दरशनको ।

हरदम प्यान धरीजोर्जी ॥

मन वच पाया भक्त रचाया ।

संसार त्रीजोर्जी ॥ वेगा ॥ ६

—

॥ श्री जिनबाणी सुननेकी उन्मुखता ॥

॥ वेदक शिरलाहो ॥ यह देगी ॥

जय जिनबाणी बोध जनानी ।

गुणरत्न अनंत बदाणीने ।

जय २ हो जिनबाणी ॥ ज्ञानिया ॥ १ ॥

अपभाविज जिन २१ जीवनी ।

महा विद्वाने २१ विद्वाने ॥ जय ॥ २ ॥





गहाग मनका मनोरथ पूगेरे ॥ जय ॥ १० ॥  
धे मुज साहिव अंतरजामी ।  
आसा पूरो भरो यह हामीरे ॥ जय ॥ ११ ॥  
हमारो उमासो जन्मको लायो ।  
गायो जिनजीको रंग बधावोर ॥ जय ॥ १२ ॥  
जीयागंजमन्दसोर पैसट वर्षे ।  
गुज गायो हीगन्गाल हर्षे रे ॥ जय ॥ १३ ॥

॥ श्री जिनराजसे जिनती म्बन ॥

॥ तीउहरी नेह निदागिदि । यह देखी ॥

आन सुख व दारणा । इ जरी बडे सुखकी बेनहो ॥

.....

.....

.....

.....



ज्याने जाया हो हुवो जन्म प्रमाणके ॥ आ. ॥ ७ ॥  
 यशःकीर्ती जगमें घणी ॥ सबसिंघको हो विघ्न गयो दूरके ॥  
 आनन्द वरते अति घणो ।  
 हिवे पामो हो ऋद्धि भरपूरके ॥ आ. ॥ ८ ॥  
 संवत उन्नीससोपेंसटो माघमासे हो शुभतिथि रखास्के ॥  
 पद पेंसट पूरण हुवा ।  
 हीरालाल ज हो पामे हर्ष अपारके ॥ आ. ॥ ९ ॥

॥ ईश्वरसे प्रार्थना ॥ राग—झुव्वाली ॥

सज्जन तुम मोक्ष पावोगे । हमे भी यादतो करना ॥  
 रहमदिलहमपर लावोगे । तुमारे कझों कामरना ॥ आं. ॥  
 एक मालिक हे तुंही । और न देव हे कांई ॥  
 आगम हमको भी आवेगा ।  
 तुमहारे कझोंका मरणा सज्जन ॥ १ ॥  
 वन्धीके वन्धीको लोडों । कर्मोंके कन्दको चोटों ॥













वहासे बारह जोजन ऊंची । सिद्ध सिलापर मुक्ती-  
पाना है ॥

सुख अनंता सिद्ध भगवंतका । जन्म मरण दुःख-  
मिटाना है ॥

जवाहर लालजी गुरु प्रसादे। हीरालाल सुख पाते-  
हैं ॥ चउदे ॥ ४ ॥

---

॥ श्री गुरुउपकार लावणी ॥

वंदगी करो गुरुकी गुनवान । जिनोका है सिरपर-  
अहसान ॥ आं. ॥

अगर जो दिया है संयम भार । उनोका है मोटा-  
उपकार ॥

होवे जो ज्ञानतणा दातार । गुणोंका गुण भूले-  
जो गंवार ॥



मिलत-उन्हेंको कोई नहीं छीते जहान ॥ बंदगी ॥ १ ॥  
 सिखाया सुत्र अर्थ और पाठ । बनाव मोन जा-  
 नेकी बाट ॥

उन्होसे रखेजो दिलमें आंटाकपटकी भंग गांठमें गांठ  
 दोहा-भोगा होवे कोई कामका । अग्र लहे तुस्त ॥  
 पहिल बेल गलियार गधा जिम । चले न-  
 सीधा पंथ ॥

मिलत-इसमत सहित है अजान ॥ बंदगी ॥ २ ॥  
 जुगत करे मोक्षमें दाताइभी नहीं होय मोक्षके प्राप्त  
 उमके कर्मते उमका नाश । फल जिम लगे जं-  
 गलमें बांठ ॥

दोहा-रूप हुन्डको लपकक । खबर निद्रा म्नाप ॥  
 लडे कानके शान व्यो । शागने बजलाप ॥

मिलत-निले क्या नाम और सम्मान ॥ बंदगी ॥ ३ ॥  
 लपनी रेलीपत्रके प्रमानाबंदगी कगे पकड दो कान





इम समझाइ संयम लीधो ।

ते तो जन्म कृतार्थ कीधोरे ॥ सुणो २ प्रे० ॥१२॥

कहे हीरालाल जो होवे वैरागी ।

जाने मोक्षतणी लवलागीरे ॥ सुणो २ प्रे० ॥१३॥

॥ वैरागीसे स्त्रीकी विनती ॥ हो पिउ पंवीछा—दे०

अहो सुणो बाहालाजी, ये लेवो संयम भागजो ।

माताने किम मेलो झुगनी लोचणांग्लो ॥

अहोसु० वो नार्याको संयोगजो ।

सुखडो तो जावे वाने वरणभ्यंग्लो ॥ १ ॥

अहोसु० कांड मन् या वड विणयारजो

प्रीतमनी या वाटज जावे प्रेमदांग्लो ॥

अहोसु० किम नजो अदर्वाचजो ।

जावे ते किम आये वडी एक प्रेमदांग्लो ॥

अहोसु० नित्य उड रम्य दागजो ।

लाधा ने अणलाधा समता राखियेरेलो ॥  
 अहोसु० कोइ बोले कडवा बोलजो ।  
 आगो ने वली पाछो नहीं झाकियेरेलो ॥ ३ ॥  
 अहोसु० कांइ करणो उग्र विहारजो ।  
 उष्ण परिसह शीतज सहवो दोहिलेरेलो ॥  
 अहोसु० रहवो गुरुकुल वासजो ।  
 विनयने वली भक्ती नहीं छे सोहलीरेलो ॥ ४ ॥  
 अहोसु० राते किम आवे नींदजो ।  
 सेजाने संधारो कर किम सोहवोरेलो ॥  
 अहोसु० घडी जावे ज्यों पट मासजो ।  
 आवेरे वीमासण हिवडे जोहवोरेलो ॥ ५ ॥  
 अहोसु० संयमनो किस्यो जोगजो ।  
 भोगेरे मन गमता भोग सुहामणारेलो ॥  
 अहोसु० जो जाणता एहवो संजोगजो ।  
 तारे तो किम कीधा व्याव वधामणारेलो ॥ ६ ॥



१. ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

२. ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

३. ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

४. ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥

५. ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

६. ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

७. ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्री ॥

८. ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

९. ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

१०. ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

११. ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

१२. ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

१३. ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

१४. ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

मिलत—डोलते मायामें ज्यों बग भीन ॥ पण्डित ॥१॥  
 चंद्र शैल चलते के दम्भान । गुजरी वक्तु पर धर-वान ॥  
 करो गुण अवगुणकी पहिचान । घमन्ड क्यों गवने-  
 हो इन्मान ।

दोहा—क्यों जतिहो बैरानको । मविर बडाहे दुर ॥  
 अन्धे हो क्यों गिने कृपमें । जो दगियाका पू ॥  
 मिलत—क्यों तुम करतेहो गमर्गान ॥ पण्डित ॥२॥  
 ताभुका पन्थ कठिण आचार । खोजा क्या उदावे-  
 नरदार ॥

निराश्रित हो करे कर्म । कर्म ही भवतु कर्मकार ।

दुःख ही भवतु दुःखकार । दुःख ही भवतु दुःखकार ।

दुःख ही भवतु दुःखकार । दुःख ही भवतु दुःखकार ।

दुःख ही भवतु दुःखकार । दुःख ही भवतु दुःखकार ।

दुःख ही भवतु दुःखकार । दुःख ही भवतु दुःखकार ।

दुःख ही भवतु दुःखकार । दुःख ही भवतु दुःखकार ।







॥ पद त्रुण्णाकी फांस ॥ राग-धन्नाथी ॥

अरे हो तृण्णा मोह लियो संसार ॥ बाल बुद्ध  
योवन वाला ॥

न कोइ पाया पार ॥ अरे हो तृण्णा ॥ आंकडी ॥

राज करंता राजा मोह्या । पट खन्डके सरदार ॥

अकस्मात बात नही मेले । न तजे टेक लगार ॥

॥ अरे हो ॥ १ ॥

कामणगारी है तृ नारी । बश कीधा भगतार ॥

कर २ प्रीती ब्रत न हुइ । सदा नखणी संसार ॥

॥ अरे हो ॥ २ ॥

तृण्णा तरंगनीहें अति गहनी । इन्द्रादिक दीना डार ॥

पार लहेपुल्पोत्तमकोडा । कठिनअमिकी खान्ना ॥ अरे ३

तृण्णाबन्दी सब जग फेर्ली । फल लागे स्वग धार ॥

खानेवाला बामत हीना । उनको डाले मार ॥ अगा ४ ॥

त्याग तृण्णा संयम पाले । छोड धन भया भन्दार ॥



ज्ञान दीपक जोया घटअन्दर । दूर किया अन्धार ॥  
 विकटघाटसे पार उतारण । किया घणा उपकार ॥ अब ४  
 हीरालाल भजमाल नामकी । जो कोइ होवे होंशियार ॥  
 रागधन्ना श्रीधुन्नलगाइ । सुणतां हर्ष अपार ॥ अब ५ ॥

॥ पद—सद्गुरु वोध ॥ गाफल मतरहै—यह देशी ॥

गुरुजी ऐसा ज्ञान सुनावे रे ।  
 अन्धेको मार्ग दिखलावे ॥ टेरे ॥  
 भवसागर से पार उतारे ।  
 काम क्रोध की लेहर निवारे ॥  
 खोटी द्रष्टि किसी परनारे ।  
 अपनी जान ज्युं जान बचावे ॥ गुरुजी ॥ १ ॥  
 जिसको संगत है मुनिवर की ।  
 उमकी नाव भव जलमे निरंगी ॥  
 विकट घाटमे पार उतंगी ।





कहोगे हमको नहीं किया पहिला ।  
 मुरिदों को अकल फिर आवे ॥ गुरुजी ॥६॥  
 अगर तुमारी है हौशियारी ।  
 भक्ती करो गुणवंतो की भारी ॥  
 हीरालाल कहे ये अकल हमारी ।  
 आलीजासे आलीजा पद पावे ॥ गुरुजी ॥७॥

॥ पद—सच्चा मित्र ॥ गजल—कवाली ॥

मित्रका भरोसा भारी । वोही जो काम आते हैं ॥  
 मुनासिबसमजके दिलको । जानमे जान लगाते हैं ॥ मि१  
 होवे कोई वचनका सूर । उनोका भागहै पूरा ॥  
 हजारों कोस भी जावे । वहां भी काम आते हैं ॥ मि२  
 मित्र वो दुःख मिटावे । सजन पन करके बतलावे ॥  
 कृष्णधानकी खन्ड गये । त्रेपती लेकर आते हैं ॥ मि३  
 भाइ लक्ष्मण के कारण । भगत उसी वक्त में थाया ॥

विमल्या दस्त लगाया । शक्ती गाउ भियाते हे ॥ मि०  
अगर दिल माफ है जिनका । प्रेम मे रहे मन उनका ॥  
शेह मे होवे मित्र नाग । कपट मे गुंजजाते हैं ॥ मि०  
हमाग काज सुधारों । विगदर पार उतारों ॥  
हंगलान्द मित्रनायेही । मोक्ष के सुखचदाने हे ॥ मि०



॥ पद-मदबोध ॥ श्रागेमन गच्यो गत्र गन्या  
यह देखी ॥

अत्रव गं लागो जी लागो । नजियो जगत का  
धन्या आगा ॥ १ ॥

कर्मो नहीं यहाँ कौटु वातकी । जो नरहित सो  
मांगा प्रसन्न ॥ २ ॥

अनूद धनना मग दना । जेना सो ॥ ३ ॥ मागा  
क्यों नरा न वलन्त म-दम ॥ ४ ॥ ॥ ॥

दयाधर्म रूचे नहीं तुजको । बोल नजाने वागो  
 वणज किया वैपारीतुमको । क्याफलहाथ लागो ॥ अ३  
 आवागमनका चरखाढोले । जैसेभाडाकोतांगो  
 क्योंसोतेहोअपनी नींदमे। अवतां सजन जागो ॥ अ४  
 गुजरगइ वापिसनहींआती । जैसे सुरंगनीरागो  
 जोखुदआपहीफिरे उघाडा। गोया उत्तकोनागो ॥ अ५  
 क्या वक्सीसकरेगातुमको । कसुमल केसरीवागो  
 धर्म तख्त के उपर बैठे । पकडे चारों पागो ॥ अ६  
 तप जप खरची बान्धी पछे । पाप अष्टादश त्यागो ॥  
 हीरालालको जन्म सुधार्यो । श्यामीजीवडभागो ॥ अ७



॥ पद-शिक्षा किसे लगे ॥ देशी वरोक्त ॥  
 अकल विन, नहीं लागे २ । सत्गुरु सीख शुद्ध-  
 ज्ञान । पुण्य विन० ॥ अकल ॥  
 आनिश होवे तो तेजी जागे । भर्मीकोक्या धागे ॥



॥ विनयका पद आजखो दृष्टाने सांन्धा को  
नहीरे ॥ यह देशी ॥

विनय करी जे गुरुदेवकोरे । अहोनिशचण के मायेगे ॥  
ज्ञान दर्शन बली तपतणोरे । चाग्निनिर्मळधायगे ॥ वि१  
संजोग छोडी दो प्रकार करे । मातपिता ने घर नामे ॥  
अभ्यंतर विषय कपायकोरे । त्यागी जो होवे अणगारे  
॥ विनय ॥ २ ॥

विनय आराधे आचार्य कोरे । होवे अंगचेष्टा को जाणरे ॥  
बल्लभ लागे गुरुदेवकोरे । जाणे ज्यो जीवन प्राणरे  
॥ विनय ॥ ३ ॥

मुख अरि वचन प्रकाशतोरे । दुष्ट आचार अयोगरे ॥  
सद्ध्या कानका श्वान सारखोरे । निर्वृष्ट नमस्तबलोरे  
॥ विनय ॥ ४ ॥

भाजन भस्यो छोडे कणतणोरे । शुकुरभिश्च जज्ञायरे ॥  
उच्च आचार जो विनय तणोरे । मृत्कीने नीच नीचो  
जायरे ॥ विनय ॥ ५ ॥



इम अनेक ओपमा करीरे । बहु सुत्री बहु गुणवानरे ॥

तारे निजपर आत्मारे । कहां लग कीजे वगवानरे

॥ विनय ॥ ११ ॥

गर्गाचार्यकेशिप्यपांचसोरे । मिल्याकुपात्रकेशीआयेगे ॥

गलियार गद्धा बैल सारीखांगे । काम भोलायां नट

जायरे ॥ विनय ॥ १२ ॥

आचार्य मनमांही चितव्योरे । छोटयो अवनितां-

का संगरे ॥

तप जप करणी कीधी निर्मळीरे । दिन २ चढता गंगे

॥ विनय ॥ १३ ॥

करेआशातना गुरुदेवकीरे । बोले जो अवगुण वादरे ॥

आहितकारी होवे तेहनेरे । ज्यो सर्प छेड्या विषवादेरे

॥ विनय ॥ १४ ॥

धर्मवृक्ष मूल विनय छेगे । मीच्या स्युं वधे परिवारे ॥

पान फुल शाखा नापजेरे । पामे मोक्ष सुखश्रेयकारे

॥ विनय ॥ १५ ॥





संवत् उन्नीसो सड सठे । कार्तिक मास शुभ वारं ॥  
 जवाहरलालजी गुरु निर्मळारे । हांगल्याल कहे  
 सुविचारं ॥ विनय ॥ २१ ॥

॥ पद—वैतन्य प्रदेशी राजा ॥ अलवंग जार्ज की देशी ॥  
 प्रदेशी राजाजी, धार्ग काया नगरी तार्जा हो ।  
 जामे हंस गजा रहे राजी हो प्रदेशी राजाजी ॥१॥  
 प्रदेशी राजाजी, धारी नगरीका द्वार जो खुला हो ।  
 आवे तम्कर कर २ हला हो प्रदेशी राजाजी ॥२॥  
 प्रदेशी राजाजी, धन माल भरी भन्दारे हो ।  
 करे चोर तेहनो नित्य हागे हो प्रदेशी राजाजी ॥३॥  
 प्रदेशी राजाजी, दग ल्यागा धारी लागे हो ।  
 विश्वाम कियों विप्र तागे हो प्रदेशी राजाजी ॥४॥  
 प्रदेशी राजाजी, नगरीमे धूम मच'इ हो  
 सहाय वेग्या वीन आ'इ हो प्रदेशी राजाजी ॥५॥



सात धातूको पिंजर बनियो ।

क्या र्थे काया सिणगारीरे ॥ आत्म ॥ २ ॥

सजन संपत मिलत बहू तेरी ।

क्या तूं लाया इखत्यागिरे ॥ आत्म ॥ ३ ॥

दुःख निवारतारे जो हमको ।

उन पुरुषोक्ती बलिहागिरे ॥ आत्म ॥ ४ ॥

कहे हीरालाल निहाल करे निज ।

मकसद लेना विचारीरे ॥ आत्म ॥ ५ ॥

॥ पद—मनता गुण वर्णक ॥ अंतर मेल मिट्यो

तर्ही मनको ॥ बहू देशी ॥

जात लायवनी लय बुजावो ।

क्या उर म मल निवार ॥ ६ ॥

क्या उर म मल निवार ॥ ६ ॥

क्या उर म मल निवार ॥ ६ ॥



शोकं मिल सला घोट्य ॥ निंदककी ॥ १ ॥

सुभद्राजीको कलङ्क लगायो ।

सासू ग्रही जिम चौथी ॥ निंदककी ॥ २ ॥

दुर्जन का कोई दाव लगे तां ।

ज्यों वाज पाइ मांस बोथी ॥ निंदककी ॥ ३ ॥

निंदक मैला सबही हेल्य ।

जिम भरी अशुचिये कोथी ॥ निंदककी ॥ ४ ॥

निंदक निंदा करतही डोलें ।

जब जीमे अहार रुचे गेथी ॥ निंदककी ॥ ५ ॥

रात्री दिन छल रहे ताकता ।

जिम वृगलो ताके मन्थी मोथी ॥ निंदककी ॥ ६ ॥

कने हीगलान चाल ननुमकी

एत एत ता ममज भाथी निंदककी ॥ ७ ॥



सत्पुरुषोंको देखकर घुरीया ॥ कलयुगमें ॥ ७ ॥

इत्यादी लक्षण कलयुगका ।

सतशुद्धी मुखे फरमाया ॥ कलयुगमें ॥ ८ ॥

कहे हीरालाल ऐसे कलयुगमें ।

जैन धर्म कल्पवृक्ष छाया ॥ कलयुगमें ॥ ९ ॥

॥ पद—जग गुण दर्शक—चेतन चेतारे—दर्शी ॥

जरा आइंरतुं चेत चित्तानन्द तज गुमगइरे ॥ टं ॥

गई अवन्था जीवनिपाकी । ज्ञायो बुद्धापो वैरीरे ॥

कायाशुभीको किलो लियो । चजदिश धेरीरे ॥ ज१

वेटा वेटी मुख नहीं बोलै । दुहो हेला पाइरे ॥

धरकी ज्ञीया मुख मचकोडे । जगा विगाइरे ॥ जन

मार्ग दिन वेनी सं धर्म । जहिन क्यों नहीं

पुनः मानस मानस कोरे । जहदि कोरे





मन नहीं माने म्हारी केण हो ॥  
गुरुजी हां हो जिनन्दजी ।  
किण विध राखूं यो मन वारी हो ॥ टेर ॥१॥  
चंचल चौर तणी परे चाले ।  
मन पवन गति वेग हो ॥ गुरुजी ॥२॥  
भक्ती में भंग करे मन मेलो ।  
तो वार २ समझावूं हो ॥ गुरुजी ॥३॥  
मन तुरंग तणी परे चाले ।  
यो भटकत रहे दिनरात हो ॥ गुरुजी ॥४॥  
पुद्गल रचना या संपत परकी ।  
तो देख २ ललचावे हो ॥ गुरुजी ॥५॥  
ध्यान चुकाय डिगाइ डाल्यां ।  
मुनिवर केइ गुणवंत हो ॥ गुरुजी ॥६॥  
मेघ मुनीको मन डिगायो ।  
तो अपाट भूती घर आया हो ॥ गुरुजी ।



पाच जनामें बेठी आगे । वात बनावे ताजे ॥  
 धर्म क्रियामें कपट करंतो । सुखियो मवमें वाजे ॥ फो॥२॥  
 धर्म उन्नतां करवा सारु । कार्य करंतो लाजे ॥  
 मृत्युक कारणव्याववर्गो । मान बढाइ लाजे ॥ फो॥३॥  
 गर्व करी इम बोले गेहलो । बान्धु ममदर पाजे ।  
 कामतणांकोइ अवसर आयां । पालो तो किम भाजे ॥ फो॥४॥  
 स्वधर्मीको साज देतां । दान सुपातगियां जे ।  
 हीरालालकहेएसामाणसको । किम सुधर्मीकाजे ॥ फो॥५॥

॥ गजल-मरमर्दा फरमान ॥ गग-कव्वाली. ॥  
 सभीका प्राण पचाना । वजन किसको न करवाना ॥  
 त्राज दिल बीच अहो भाइ । सभी शास्त्रके मांही ॥  
 महमदका जो फरमानां । कहां लिखानो भी बतलाना ॥  
 हुक्म राजनका बोली । तोगत अजिल करवाना ॥  
 वंगन नगामन विम्वे । सभी दिन दरे हे निम्वे ॥







होन हार पदार्थ प्रगटे । तूं क्यों भूला फिरे ॥ते॥१॥

संभूम चक्री विसापाइ । रस रामसे डेरे ॥

राज लियो छे खंडको सारां । जो वैरीको दूर

करेरे ॥ तेरी ॥ २ ॥

कंस कृष्णका झगडा भारी । कैसा दाव धेरे ॥

फते हुइ सुरारीकी सारी । कंस गयो यम घेरे ॥ने॥३॥

पुफदंत वच्छ राजको डाल्यो । समुद्र जल भेरे ॥

राजा दशस्थ छलवा काजे । राक्षस होंस भेरे ॥तं॥४॥

अंतर आत्मध्यान लगायां । अपना काज सेरे ॥

कहे हीरालाल जहाज जक्तकी । आपो आप तीरेरे

॥ तेरी ॥ ५ ॥

॥ उपदेशी लावणी छोटी कडीमें ॥

यह कंचन वर्णी काय पाय नुन प्योग ।

राय नर भवरो अवतार जन्म क्यों हारे ॥





यह जीना जिन्दगी तो यही फरज है तुमको ।  
 भक्ति प्रभूकी याद करो हर दमको ॥  
 यह क्रोध मान मद मोह जीतलो मनको ॥  
 करो ज्ञान ध्यानका युद्ध हटादो यमको ।  
 कहे हीरालाल मतपडो भर्म मित्रारे ॥पाय।४॥

॥ लावणी उपदेशी—यगंक्त चालमे ॥

तू क्यों करता है मान । जिन्दगी जीना ।  
 तेरा चला जाय जीवन । पानीका फीना ॥४॥  
 बड़े भूप कही गर्भके अन्दर लाया ।  
 होगये दुनिया में जैसे बदनकी लाया ॥  
 चिलका बीजली गेन मे न्यपना आया ।  
 क्या न्याती है देग इवक इवकाया ॥  
 गवणके मुताबिक वेड हुंसे - खमीना ॥नेग॥१॥  
 मह गों में हांताथा गग वमर दखना



मुनि एवता आया गौचरी। कंशके महेलां मांयजी॥  
 जीव जसा जब फिर गइ आडी। करीकु बुद्धवतलायजी  
 भाइ तुन्हारा राज करत है। थे डोहलो घरन्दारजी ॥  
 एक मात और तात तुह्याग। कौनलेवेकर्मवटायजी॥  
 जब मुनीने ज्ञान विचारा। होतव जैसा दरशायजी॥  
 पुत्र नणंदका होसी सातमां। धने देसी खूणे वेठायजी॥  
 होनहारनहींमिटेकिसीका। नामप्रभूका भजलेना ॥ तु. २॥  
 राजा रावणकी बहिन पापनी। बुरी सीख बतलाइ है॥  
 वैठ विमाने चले राजवी। सीता लेनेको आयजी ॥  
 करी कपट सीताको लीधी। लंकाके वागमें लायजी॥  
 हनुमंत उसीकी खबर करी है। सीताको सुख पायजी॥  
 रामचन्द्र लस्करले चाडिया। जब रावण धवरायजी॥  
 बान्ध लिया पग्वार उमका। बोभी नर्क सिधायजी॥  
 ऐसाहालमालुमहुवाहै। चरित्रत्रियाकाक्याकहना ॥ तु. ३  
 और सूत्रोंमें वैईका वर्णन। समझो चतुर सुजानजी॥



तस्तु सिला एक नगरीजी ।

और रहे अठणुं पुत्रजिनोको दे दी सगरीजी ॥

यह ब्राह्मी सुन्दरी पुत्री आपकी दोई ॥ महागज ॥

रही वो अकनकं वारीजी ।

इन के नहीं कर्मका भोग। जाउंजिनकी बलिहारीजी ॥

अब पुण्योदय भरतेश्वर छःखण्ड मांही ॥ महागज ॥

वैरीको किया आधिनोजी ॥ दिया ॥ १ ॥

यह चक्र रत्न नहीं आवे आपठिकाने ॥ महाराज ॥

भाईसे करी तकरारीजी ॥

देखी भरतेश्वरकी खेंच । आदम पे गये पुकारीजी ॥

यह ऋषभदेव उपदेश देइ समझाया ॥ महाराज ॥

अठणुं कारज मार्याजी ॥

ग्या बाहूवरु मग्दार । बांका नरवार्याजी ॥

नहीं माने आण परवाना परगपत्रया ॥ महागज ॥

शैल्य पर हुकमज दीनोजी ॥ दिया ॥ २ ॥



रस समताको पीनोजी ॥ दियो ॥ ४ ॥  
 यों कियो लोच सब सोचको अलग हटाया ॥ महागज ॥  
 भस्तेश्वर मन विचारीजी ॥  
 मत मानो हमारी कहन । भोगवो ऋद्धि तुमारीजी ॥  
 नहीं माने बाह्वल वात के संयम लीनो ॥ महाराज ॥  
 दिलमें आयो अभिमानोजी ॥  
 नहीं पट्टं पांव लघु भ्रात । वनमें रघ्या धर ध्यानोजी ॥  
 हीरालाल कहे अब करो मोतकी करणी ॥ महाराज ॥  
 आप छे ज्ञानका भीनाजी ॥ दिया ॥ ५ ॥

---

॥ लावणी—बाह्वली मुनीको ब्राह्मी सुन्दरी  
 सनियों का तद्वोध ॥ चाल बगेक्त ॥  
 यों कहे ऋषभजिन ब्राह्मी सुन्दरी दोई ॥ महागज ॥  
 मुनिको जाइ तमझावोजी ॥  
 धां लीनो मयम भार । मान तो पगे मित्रवाजी ॥ देग ॥





प्रभूके पास सिधावोजी ॥ थां ॥ २ ॥

यह क्रोध मान जो चारों मोक्ष अटकावे ॥ महाराज ॥

ऐसी या सीख सुनाइजी ॥

झट उतर गयो अभिमान । दिल की थी गुमगईजी ॥

अब जावूं जिनेन्द्रके पास सुनियोंको वंदू ॥ महागज ॥

पांव जब एक उठायोजी ॥

तब ज्योति अधिक उद्योत । ज्ञान केवल प्रगटायोजी ॥

यह बाह्यल केवली एम कहवाया ॥ महागज ॥

सभीमिल मङ्गल गावोजी ॥ थां ॥ ३ ॥

यह कियादेव मोहत्सव दुंदभी वाजी ॥ महाराज ॥

आया समवसरणके मांहीजी ॥

श्री आदीनाथ महाराज । सभामें दिया फरमाईजी ॥

यों लक्ष चउगसी पूर्व आउवो मोत्रे ॥ महागज ॥

अटल अविचल पद पायाजी ॥

श्री रत्न चन्दजी महागज । शिष्यको ज्ञान भणागजी ॥



क्रुद्ध पडे कन्हैया दपटी ।  
 गेद लिवी नागने झपटी ॥  
 कहे नागनी तूं है कपटी ।  
 जब नागनी नाग जगावेरे ॥ क ॥ ३ ॥  
 जागा नाग सहश्र फण वाला ।  
 किया युद्ध नहीं खाया टाला ॥  
 नाथा नाग श्रीनंदके लाला ।  
 गवाल्या धै धै कने आवेरे ॥ क ॥ ४ ॥  
 महिया वेंचन चली है गुजरी ।  
 वक्त हुईथी जब बडी फजरी ॥  
 हट कर कर मटकी पकरी ।  
 ग्वालन कमरसे लचकावेरे ॥ क ॥ ५ ॥  
 कार लोप मत करो कन्हैया ।  
 मुफ्त माल मत खावो महिया ॥  
 सं० अ० श्री गणेशाय नमः ।



॥ जीव जसाका एवता ऋषिसे सवाल ॥

चंदा प्रभू जगजीवन अंतर्यामी ॥ यह देशी ॥

सुनो देवरजी, संयम छोडी महेल पधारो-

महाराजीया ॥ टेर ॥

मुनिवर आया गौचरी । भोजाइ आडी फीग ॥

देवरस्युं करे मश्करी ।

ये स्वांग धरीने कांइ डोलो घरोघरी ॥ सुनो ॥ १ ॥

पाय अणवाणे चालनो । उघाडे मस्तक हालनो ॥

दोष क्यांलीस टालनो ।

ऐसो कष्ट आचार क्यों पालनो ॥ सुनो ॥ २ ॥

जाया एक मातारा । अंतर नहीं कोइ वातांरा ॥

क्षत्री कुल जादू जातांरा ।

थांके लिख्या लेख हाथ पातरा ॥ सुनो ॥ ३ ॥

मार्गमें ऊर्भी ग्ही । हाथ दोइ आडा दई ॥

आगे जावां देस्यु नहीं ।



गोबरमें कीटक जिम फूलेछेतूं मानशिखरपर डोलेछे।  
 कूवा के मेंडकने तोले छे ।

अधिका से अधिका तर बोले छे ॥ सुनो ॥ ३ ॥

यामस्तक गुंथावे जोनारी । पुत्ररत्नने जणसीया भारी॥  
 सातमो नाम होसी गिरधारी ।

खूणे घाल धने करसी दुःखयारी ॥ सुनो ॥ ४ ॥

सुनजीवजसामनदडकानी॥छोडमार्गअलगीसम्कानी  
 प्रीतमसे पुकार करी आनी ।

हीरालाल गावे सुनिबर बानी ॥ सुनो ॥ ५ ॥

॥जीव जसा और कंशराजाका विचार—देशी बरोक्क॥

सुनोप्रितमजी! भाइ तुम्हारा। आया हमघर गौचरी ॥

अहो प्रितमजी ! वचन कठिन कहीने ।

गया पाछा फिरी ॥ छे ॥

मेंतोना प्रथमे इन् डेनही। वनेप्रितमजी आइमनमही॥





॥ छे भाइ साधूका वर्णन—लावणी चाल लंगडी ॥  
 श्रीनेमीनाथभगवानपधारे।भव्यजीवोपेउपकारकरण ।  
 भदलपुरकेवागमें । रच्योदेवता समवसरण ॥ टेरे ॥  
 नागसेठमातासुलसांके । छे नंदनहुवेअतिगुणवंत॥  
 नलकुंवरकी औपमा । शास्त्रमें भाखी भगवंत ॥  
 वाणीसुनीश्रीनेमीनाथकी।संयमलीनोधगीमनवंत ॥  
 मातापासे आयकर । पूछत सुछा हूइ मतीवंत ॥  
 शेर—सेठ सेठानी इम कहे।मुझ बलम होइ इष्ट कंतजी॥  
 कुल दीपक चन्द्र जैसा । प्राण जैसा अत्यंतर्जा ॥  
 चारित्रतोअतिदोहिलो । नहींसोहिलोलगारजी॥  
 कष्ट करणी सर्व वरणी । करनो उग्रह विहारजी ॥  
 छूट-बहु भांत कियो उपाय कुंवर नहीं मानी ।  
 जब मात पिता इम कहे लगो एक ध्यानी ॥  
 मौछव कर संयम लियो प्रभू पाम आनी ।  
 हुवे श्री नेमीनाथके निप्य उत्तम पद प्राणी



वारह योजनकीलम्बीनगरी। नवयोजनचौडीजानी॥

बलभद्र कृष्णकी जक्तमें। जोडीहै अविच्छल आनी ॥

द्रव्यवंत दातार घणेर। जिन-भक्त सुनता वाणी ॥

मुनिराजको क्यों नहीं। मिलियो फिगतो अन्नपाणी॥

शेर-देवकीसे मुनिवर कहे । नगरीमें बहु दातारजी॥

तीन सिंघाडाहम आविया। षट्भाइएकउणियारजी॥

कोन मात कोन तात थारा। कोननगरीकोवामजी॥

भद्वलपुरमें सुलसाजी । नाग शेट सुत खासजी ॥

छूट-एक एक जणेको वतीसपरणाई ।

बो नार्या कंचन वरणी कमी नहीं कांई ॥

इण भांत ऋद्धि मुनिराज सर्व संभलाई ।

फिर आया नेमजी पाम आज्ञा पाई ॥

मिलत-मुनिराजका वचन सुनकर ।

गरी आश्रय अति करण । भद्वर ॥ ३ ॥

मुनि एवंता वहाया मुनको । अष्टपुत्र प्रयायंति ॥



छे पुत्र सुलसाधर बधिया। सोसवजिनवरफरमाया ॥  
 सोलह वर्ष नंदधर रही । अर्हीर कृष्ण ये कहवाया ॥  
 शेर—माताके पांव लागवा। आया कृष्ण महाराजजी ।  
 माताकी चिन्ता देखकर । गिरधर हुवा नागजजी ॥  
 हाथ जोड़ी मान मोड़ी । पृष्ठियो विरतंतजी ॥  
 माताने पुत्रके आगे । सब भाखियो अरहंतजी ॥  
 छूट—भाताकी चिन्ता भेटी सब गिरधारी ।  
 हुवा भ्रात आठमां जगमें बल्लभकारी ॥  
 महाराज नेमजीकी वाणी सुनी धृत धारी ।  
 हीरालाल कहे गजमुनिको वंदन हमारी ॥  
 मिलत—श्री जवाहरलालजी गुरु देव हमारा ।  
 भवसागर तारण तिरणं ॥ भद्रल ॥ ५ ॥

पद—द्रौपदीका सत्य ॥ राजा हूं मैं कौमका ए देशी ॥  
 बचन सुणी नारद तर्णा । पद्मनाभ भूपाल ॥



पांडव पांचो जागिया । खबर करी सब देश ॥  
 कुंथाजीको भोजिया । श्रीपति जहां नरेश ॥ व ९ ॥  
 पाया पत्ता नारदसे । हरी पांडव सब सिंघ ॥  
 गंगा तटके ऊपरे । लड़कर जेम तरंग ॥ व १० ॥  
 सुर शक्ति समुद्र तीरी । धातकी खन्ड मझार ॥  
 अमरकंखा कोटा दीवी । पद्मनाभ गयो हार ॥ व ११ ॥  
 द्रोपदी ले हाथे दिवी । करी दुश्मनको घाण ॥  
 हीरालाल कहे जीतका । घुरिया तुर्त निशाण ॥ व १२ ॥

॥पद—कृष्ण विलाप. राग अलिया मारू मलहार ॥  
 ओजी नीर लावो वीर प्यारा ।  
 यातो प्यास लगी परिहारारे ॥ टेर ॥  
 कर पत्र पात्र जलके कारण ।  
 पहोता मखर पारंग ॥ नार १ ॥  
 हरी पोटय ओडन पितम्बर ।





देवता आइ दिया समझाइ ।

हलधर लिया संयम भारे ॥ नीर १० ॥

कहे हीरालाल नेमजीकी वाणी ।

मिलिया छे तंत सारारे ॥ नीर ११ ॥

---

### ॥ राम-चरित्र ॥

सीताहरण-जटाउ ओछारा।देर्माख्यालकीपटपदी॥

अमरगतपाया।पंक्षीतिरियोरेसुणी नवकारने ॥अं ॥

सिंह नादजो सांभली सरे । राम गया झट चाल॥

पाछे रावण आवियो सरे । कीधी माया जाल ॥

सीताकोलेचालियोसरे।देखी रूप रमाले ॥अ॥१॥

निहां जटाउ पक्षीयो सरे । गहनो सीता पास ॥

भोलावण राम दे गया सं । सीताकी महशाम ॥

रामकगलागं हुवा मरे।दे रावणको त्रामरे।अ॥२॥

वरज्यो तो मान नई सरे । पंच छेद दियो डार ॥



जब लिया सीताजी आप । अविग्रह धारी ॥  
 आवे राम लक्ष्मणकी खबर । मुझे सुख कागि ॥  
 जब कलंगा भोजन । पिवूंगा निर्मल वारी ॥  
 इम निश्चय कीधो मन । द्रवता धारी ॥  
 करेनवकरमंत्रकाजापापाप हटायाउनको ॥मेली॥१॥  
 यह खबर शहरमें हुई । नभीजन जाणी ॥  
 रावण लायो पर नार । कुबुद्ध उठाणी ॥  
 आयो सीताजी पास । बोले यों वाणी ॥  
 कोन मात तात घरनार । किसे यहां आणी ॥  
 सीताजाणीपुरुष पुण्यवंत।बोलेनरइनको ॥मेली॥२॥  
 जब मांड हकीगत । सभी हाल सुनाया ॥  
 राजा रावण छलकरके । मुझे यहकहाया ॥  
 यह लंका नगरीका । ग्रह जो ऐसा आया ॥  
 या दश मन्तक रावणके । कानर कहवाया ॥  
 समझाकर राजा रावणको । भेजादो बरे हमनको म३॥













हाथजोड या अर्ज हमारी । मानो तो याही धरीरे ॥  
 परत्रियाको पातक मांढो । डालो क्यों न परीरे ॥पि५॥  
 होनहार जैसी बुद्धि आवे । उपजन अंग स्वरीरे ॥  
 हीरालाल कहे चंदके गह्वरकुमतियोंआणफिरीरे ॥पि६॥

॥गवणको भभीनणकी शिखामण॥ आमावरी-गग॥  
 तेरी दरी कैसे दरे सयातो ज्ञानीयांशाखभरे ॥ दू ॥  
 पुश्कल वेलों देदेहेला । नमज्ञायाही मरे ॥  
 बंधव हमारा प्राणने प्याग । ताते पांव परे ॥तेरी१॥  
 जो कल्लु हूवा सोतो हूवा । अवही चित्त धरे ॥  
 पाछली भूल चेत नकोई । तो पण काज मरे ॥तेरी२॥  
 दियां परनारी टल घान धारी । घुं जानत नवके धरे ॥  
 यां ऋषिवाणी सुणी अगवाणी । ते कये मल परीरे ॥ते३॥  
 बुद्धमे भृग प्राक्रम पुरा । कोइमे ना हरे ॥  
 अडे मन्वेत नेगवल नोकी । विनिजे मल कोरे ॥ते४॥



चुप रह रही उपर सेती । मुद्रिका ताम गिरावे ॥  
 देखी मुद्रिका सीता पतीकी । हर्ष हिये न समावे ॥ प ४  
 विन्ता जाणीने प्रगट हूवा । चरणे सीश नमावे ॥  
 रामलक्ष्मणदोनोंहैषणासुखमें । तुम क्यों अतिव्यावे ॥ प ५  
 कहां लक्ष्मण कहां राम विगजे कहांपर स्थान लहावे ॥  
 सुधिव नृपके काज शुधारी । केकंदा संगमिल्लवे ॥ प ६  
 देवो सेलाणी सांवी हमको । जलदी बल्लतो जावे ॥  
 हीरालाल कहेहोवे नरगूरा । कार्य पात्र लगावे ॥ प ७ ॥

॥ रामजीकी जीत ॥ लावणी-वाल दूणकी ॥  
 यह अतुल बलीवंत जक्तके मांही ।  
 महाराज फते जंग हुवा परवानाजी ।  
 नव लिया राज त्रिबन्ड आजघर संग बधानाजी ॥ टेग  
 यह राजा रावण परलोक हुवा परजामे ।  
 महाराज यक्षस मिल भागण लागार्जी ।



महाराज केइ नृप हुवा वैरागी जी ।

श्री कुंभकरण इन्द्रजीतज मारा था वडभागीजी॥

केइ राण्या प्रमुख संयम मार्ग लीधो ।

महाराज सत्यका सत्य नहीं छोडा जी ।

कियानदीनखदावीचसंधारा मुनिनेकर्मको तोडाजी॥

यह दियाः राज लंकाका भिक्षणजीको ।

महाराज अयुध्या नगरीको आनाजी ॥ सब ॥३॥

यह दिगविजय कर देश सभीको साधा ।

महाराज सोलह सहश्र देशा भूप नमायाजी ।

करी तीनखण्डमें आण अजुदया नगरीको आयाजी॥

यह उन्नीसो चौंसठके साल चौमासा ।

महाराज शहर मंदसोर के मांही जी ।

श्रीजवाहरलालजी महाराज ठाणादशरह्या सुखपाइजी ।

या जुगल लावणी जयकारणी जगमांही ।

महाराज हीरालाल कोटी मङ्गल गवानाजी॥सब॥४॥



ऊंचा पहाडझाडीजंगलमे । जहांसीताकोउतारदिया॥  
कहता सारथी सुणोरी माइ । हमने खोटा जन्म लिया॥

छूट-नवकार मंत्रका जाप लियाहै सरना ।

सब विघ्न विनाशे दूर सुख के करना ॥

मामाजी सीताके आय लेजाय घरम्याना ।

हुवे जुगल पुत्र गुणवान यौवनमे सोभाना ॥

मिलत-संजी सवारी अजुध्या उपर

रामचंद्रसे आन भिडी ॥ धीज ॥ २ ॥

किया युद्ध हंटाया लस्कर । रामजी का नहींहाथचले॥

नेणभूजाफरकणसेजाणा । सजनजनकोइआंघ मिले॥

इत्नेमें कोइ आयसुनावे । सीतासुत अंगजात भले ॥

छूट-लोकीक सुधारन कोज के धीज ठेरावे ।

कर उंडा कुन्ड अमिसे पूर्ण भरावे ॥

सीता स्नान कर आले वस्त्र पहर आवे ।

होवे सील सांच मुज आंच रति नहीं आवे ॥









मिलत—जो बन्धा निकाचित आयुष्य नरकर्केमाही।  
 महाराज कर्ता वौही पाय के भरताजी ॥ श्रीरामा॥३॥  
 यह दिया दम दिलासा मोह वश केइ ।  
 महाराज कहौ कछू कयो न जावे जी ।  
 बडेरमनुष्य और इन्द्र जिनोको भ्रमन करावेजी ॥  
 फिर रामचन्द्र महाराजको सीस नमाया ।  
 महाराज इन्द्र गये आप ठिकाने जी ।  
 हुवा रामऋषिश्चर सिद्ध जिनोको जंक्त में जाने जी॥  
 चोपाइ—श्रीरत्नचन्द्रजी ज्ञान शिषायो ।  
 जवाहरलालजी मुनी गुरुपायो ॥  
 जिन मार्ग के सरणमें आयो ।  
 हीरालाल सदा सुख चहायो ॥  
 मिलत—यह उन्नीसो चौसट साल भोपालके मांही ।  
 महाराज आनंदसदा रहेहै वंरताजी॥ श्रीरामा॥३॥



मिलत—जो बन्धा निकाचित आयुंष्य नरकके माही ।  
 महाराज कर्ता वोही पाय के भरताजी ॥ श्रीराम ॥ ३ ॥  
 यह दिया दम दिलासा मोह वश केइ ।  
 महाराज कहौ कछू कयो न जावे जी ।  
 वडेश्मनुष्य और इन्द्र जिनोको अपन करावेजी ॥  
 फिर रामचन्द्र महाराजको सीस नमाया ।  
 महाराज इन्द्र गये आप ठिकाने जी ।  
 हुवा रामकृपिश्वर सिद्ध जिनोको जक्त में जाने जी ॥  
 चोपाइ—श्रीरत्नचन्द्रजी ज्ञान शिष्यायो ।  
 जवाहरलालजी मुनी गुरुपायो ॥  
 जिन मार्ग के सगणमें आयो ।  
 हांगलाल मदा सुख चहायो ॥  
 मिलत—यह उर्नामां चांमट माल भोपालके मांही ।  
 महाराज आनंदमदा गंहे वग्तार्जा ॥ श्रीराम ॥ ३ ॥



जै वात है न्यारीजी ॥ कियो ॥१॥  
ना श्रेणिक को पकडपींजरमैडाले ।  
जकी करली पांतीजी ।

तन प्रमाणहुवारजाकाघातीजी ।  
पतिको देखी गफलतमांइ ।  
।दम मिलकर आयाजी ।

१५५.

रेसिंघजोरनहींचलेचलायाजी॥

छूट-कोणिक ७०० गादीपर आकर बैठा ।

माता के पांव पडन को गया था बैठा ॥

माताने आदर नहीं दिया रखदिल सेंद ।

धरलियो ध्यान रानीको झुका सिर हेठा ॥

मिलत-कंवर कहे मात हमारीजी ॥ कियो ॥२॥

मैं राजलियो धाने हर्ष भाव नहीं आयो ।

महाराज राणी हकीगत सुणावेजी ।

तेने किया बाप सेवैर मुझे हित कैसे आवेजी ॥





छूट-यों केवल ज्ञान पद परमार्थ को पासी ॥  
फिर जन्म मरण रोग सोगमे कभी न आसी ।  
हीरालाल कहे गुणवंत तणा गुण गासी ।  
तास घर सदा ऋद्धि सिद्धी मङ्गल बरतासी ।  
मिलत-हवा केइ पर उपकारोजी ॥ कियो ॥ ४ ॥



॥कोणिक चेडाका युद्ध-लावणी चाल दूणकी ॥  
यह अमरपति नरपति खगपति राया  
महाराज सवी लालचको ध्याताजी  
परम शांत उपशांत हुवा फिर मुक्तिपाताजी । ट्रे ।  
या चंपानगरी वमे लोक धनवंता  
महागज कोणिक नृप गज कंग्दारी  
यह बेहल कुँवरको हकहार हार्थी मोजपुरदारी ॥  
यह जन्मकिडा कर्मणको गंगा जलमांही ।  
महाराज बेहल कुँवर जब जावेजी ।







महाराज सक्केन्द्र और चमर इन्द्रांजी ।  
 फिर हुवा भारत भरपूर मनुष्यका वृन्द वृन्दांजी ॥  
 जब चेडा महाराज दिलमें वहू घवराया ।  
 महाराज जवरसे जोर न चलताजी ॥ परम ॥ ३ ॥  
 जब भवनपति सुरभवनके अंदर लाया ।  
 महाराज करी अणसण सुख पायाजी ।  
 ले गया देवता हार, हाथी अग्निमें समायाजी ॥  
 यह माया जालका झगडा जगके मांही ।  
 महाराज गिणे नहीं कोइ सगाइजी ।  
 वाप वेद्य भाइ परिवार और सब लोग लुगाइजी ॥  
 श्रीजवाहरलालजी महाराजके चरणां मांही ।  
 महाराज हीरालाल ध्यान लगाताजी ॥ परम ॥ ४ ॥

---

॥ श्रावक वर्ण नाग नतवाकी सहाय ॥  
 आज्ञतो दृष्टाने सांधोको नहीरे ॥ यह देशी ॥



विनअपराधपहिलानहींहणरे।कीधोछेयहपरिमाणरे॥७  
 जामतेवैरीवाणमूकियोरोलागोआणीनागजीकेसाथरे।  
 रीसआणीनेधनुष्यखेंचियोरो।अवदेखतुंपुरुषोकाहाथरे  
 एकहीवाणवैरीमरीगयोरोस्थलीनेछेपाछोपलटायरे॥  
 संथारो कियो एकांत जायनेरे ।

वाण खेंचता आयु पूरो थायरे ॥ चेढा ॥ ९ ॥  
 पहिलेस्वर्गमें जाइऊपनारे।आयुष्य पायाचारपलरे॥  
 महाविदेहमांहीजन्मसीरो।मोक्षमेंजासीमेटीसलरे॥चे१०  
 बालमंत्रीथोएकनागनोरोदेखादेखीराख्याशुद्धभावरै॥  
 महाविदेहक्षेत्रमांहीजन्मियोरो।मोक्षजासीकर्मक्षपायरे॥  
 संवत उन्नोसो वांसठेरे । वार तिथी शुभ जोगरे ॥  
 हीरालालगायोरामपुराविपेरे।सुणजोसहृश्रावकलोगरे

॥ महाशतकर्जा श्रावकर्का सजाय ॥

हूंतो वार्गहो जिनवर नेमी ॥ यह देखी ॥





लोलुकपहिलीनकर्म । धारिगतिकर्मकेजेरो।आ।।८।।  
 ववनलुपीनेपाठीगइ । तवनधार्याश्रीवृद्धमान ॥  
 गौतमजीनेमोकल्या।सुधाखा।श्रावकजीरोध्याना।श्रा३  
 मांससंधारेस्वर्गसुधने । चारपत्यआयुष्यरेजोग ॥  
 श्रावकजीसुद्धभोगवे।सुक्तिजालीमहाविदेहेकेनोग१०  
 गुरुश्रीजवाहरलालजी । ज्ञानध्यानपुणनेदयाल ॥  
 हीगलालगायोहर्षस्थं।संवत्तउमीतोवांसठकेसाला॥११

॥सती चंदनजाला चरित्र ॥ लावणी-बाल इपकी ॥  
 या चंपानगरी दधीवाहन वर पूत्री ।  
 महाराज रुद्रने ज्यो इन्द्राजीजी ।  
 हुइनहावीरजीकीआपगि।पनीनधनवसानीजी।देरा  
 पो वीमिंदी नगरीको राजा बडकर आयो ।  
 महाराज रुद्रके हुइ नडाइजी ।  
 सब दधीवाहन वर हा गये सब सब नडाइजी ॥







गायो संती तणो सम्बन्ध दिनोदिन आनन्दाजी॥  
श्री जवाहर लालजी महाराज धर्म दीपायो ।  
महाराज हीरालाल विघन हटानीजी ॥ हुइ ॥ ६॥

---

॥ वंकचूल सम्बन्ध ॥ लावणी-चाल झूणकी ॥  
यह लिया वृत पञ्चखाण को निर्मल पाले ।  
महाराज कष्टमें कभी नही डिगताजी ।  
गवित्तजायसव दूर मिले सुखसव मन गमताजी॥टेर॥  
इह वंकचूल कुँवर हूँता राजाका ।

गज पल्लीमें जाकर बसियाजी ।

चामरदार सदा कु कर्म में फसियाजी ॥

गर्ग भृञ्ज मुनिश्वर आया ।

में चोमामो कीशोजी ।

उपदेश मुनिजी मानज लोथो जी ॥

उग हुवा, मुनिश्वर किया विहारज



गायो संती तणो सम्बन्ध दिनोदिन आनन्दाजी॥  
श्री जवाहर लालजी महाराज धर्म दीपायो ।  
महाराज हीरालाल विघन हटानीजी ॥ हुइ ॥ ६॥

---

॥ वंकचूल सम्बन्ध ॥ लावणी-वाल दूणकी ॥  
यह लिया घृत पञ्चखाण को निर्मल पाले ।  
महाराज कष्टमें कभी नही डिगताजी ।  
यावित्तजायसब दूर मिले सुखसब मन गमताजी॥टेर॥  
यह वंकचूल कुँवर हूँता राजाका ।  
महाराज पल्लीमें जाकर बसियाजी ।  
हुवा चोरो कासरदार सदा कु कर्म में फसियाजी ॥  
एक दिन मार्ग भूल मुनिश्वर आया ।  
महाराज पल्लीमें चौमासो कीयोजी ।  
मन देना इहां उपदेश मुनिजी मानज लीधो जी ॥  
शर-चतुर्मास पूरा हुवा. मुनिश्वर किया विहारज









त्याग खन्डयां धर्महारे । यों करती है प्रकाशजी ॥  
चो-श्रावक कुंवरको आइसेंठो कीधो ।

कुंवर अणसण पचखी लीधो ॥

स्वर्गवारमें पहाँतोसीधो।त्याग चारतणोफललीधोजी॥  
मिलत-श्री जवाहरलालजी महाराज तणे प्रसादे ।

महाराज हीरालाल कहे सुमतिके धरताजी ॥याथ॥

॥ मानतुंग मानवतीकी लावणी ॥ चाल-दूणकी ॥

यह एवंती देश उज्जैनी नामें नगरी ।

महाराज मानतुंग महीपाल कहवानाजो ।

त्रियाकीजालका फंद काम अन्धभोगठगानाजी॥टेर॥

एकदिन भूप रजनीका मौका देखी ।

महाराज शहरमें फिर वो चलकेजी ।

चार चतुर कन्या मिल वानां करे हिलमिलकेजी ॥

आपाग्मां आजकी गत व्याव मन्डे कलकेजी ।

महागज मासरे वासज लेनांजी ।



No.	Name	Address	City	State	Zip
1	John Doe	123 Main St	New York	NY	10001
2	Jane Smith	456 Elm St	Los Angeles	CA	90001
3	Robert Brown	789 Oak St	Chicago	IL	60601
4	Mary White	101 Pine St	Houston	TX	77001
5	James Black	202 Cedar St	Phoenix	AZ	85001
6	Sarah Green	303 Birch St	Philadelphia	PA	19101
7	William Red	404 Spruce St	San Antonio	TX	78101
8	Elizabeth Blue	505 Willow St	San Diego	CA	92101
9	Thomas Yellow	606 Ash St	Dallas	TX	75201
10	Patricia Purple	707 Hickory St	San Jose	CA	95101
11	Charles Orange	808 Magnolia St	Austin	TX	78701
12	Barbara Pink	909 Dogwood St	San Francisco	CA	94101
13	Richard Grey	1010 Sycamore St	Fort Worth	TX	76101
14	Laura White	1111 Redwood St	San Jose	CA	95101
15	Joseph Black	1212 Cypress St	San Antonio	TX	78101
16	Michelle Green	1313 Juniper St	San Diego	CA	92101
17	David Brown	1414 Fir St	Dallas	TX	75201
18	Christina Red	1515 Hemlock St	San Jose	CA	95101
19	Andrew Blue	1616 Spruce St	Austin	TX	78701
20	Stephanie Yellow	1717 Cedar St	San Francisco	CA	94101
21	Christopher Purple	1818 Birch St	Fort Worth	TX	76101
22	Nicole Orange	1919 Willow St	San Jose	CA	95101
23	Brandon Pink	2020 Ash St	San Antonio	TX	78101
24	Rebecca Grey	2121 Dogwood St	San Diego	CA	92101
25	Kevin White	2222 Sycamore St	Dallas	TX	75201
26	Amanda Black	2323 Redwood St	San Jose	CA	95101
27	Jonathan Green	2424 Cypress St	San Antonio	TX	78101
28	Samantha Brown	2525 Juniper St	San Diego	CA	92101
29	Benjamin Red	2626 Fir St	Dallas	TX	75201
30	Hannah Blue	2727 Hemlock St	San Jose	CA	95101
31	Isaac Yellow	2828 Spruce St	Austin	TX	78701
32	Grace Purple	2929 Cedar St	San Francisco	CA	94101
33	Henry Orange	3030 Birch St	Fort Worth	TX	76101
34	Isabella Pink	3131 Willow St	San Jose	CA	95101
35	Liam Grey	3232 Ash St	San Antonio	TX	78101
36	Mia White	3333 Dogwood St	San Diego	CA	92101
37	Noah Black	3434 Sycamore St	Dallas	TX	75201
38	Olivia Green	3535 Redwood St	San Jose	CA	95101
39	Peter Brown	3636 Cypress St	San Antonio	TX	78101
40	Quinn Red	3737 Juniper St	San Diego	CA	92101
41	Rachel Blue	3838 Fir St	Dallas	TX	75201
42	Samuel Yellow	3939 Hemlock St	San Jose	CA	95101
43	Tina Purple	4040 Spruce St	Austin	TX	78701
44	Umar Orange	4141 Cedar St	San Francisco	CA	94101
45	Vanessa Pink	4242 Birch St	Fort Worth	TX	76101
46	Walter Grey	4343 Willow St	San Jose	CA	95101
47	Xavier White	4444 Ash St	San Antonio	TX	78101
48	Yara Black	4545 Dogwood St	San Diego	CA	92101
49	Zoe Green	4646 Sycamore St	Dallas	TX	75201
50	Adam Blue	4747 Redwood St	San Jose	CA	95101
51	Bella Yellow	4848 Cypress St	San Antonio	TX	78101
52	Carl Purple	4949 Juniper St	San Diego	CA	92101
53	Diana Orange	5050 Fir St	Dallas	TX	75201
54	Ethan Pink	5151 Hemlock St	San Jose	CA	95101
55	Fiona Grey	5252 Spruce St	Austin	TX	78701
56	Gavin White	5353 Cedar St	San Francisco	CA	94101
57	Helen Black	5454 Birch St	Fort Worth	TX	76101
58	Ian Green	5555 Willow St	San Jose	CA	95101
59	Jessica Blue	5656 Ash St	San Antonio	TX	78101
60	Kyle Yellow	5757 Dogwood St	San Diego	CA	92101
61	Laura Purple	5858 Sycamore St	Dallas	TX	75201
62	Leo Orange	5959 Redwood St	San Jose	CA	95101
63	Mia Pink	6060 Cypress St	San Antonio	TX	78101
64	Nathan Grey	6161 Juniper St	San Diego	CA	92101
65	Olivia White	6262 Fir St	Dallas	TX	75201
66	Peter Black	6363 Hemlock St	San Jose	CA	95101
67	Quinn Green	6464 Spruce St	Austin	TX	78701
68	Rachel Blue	6565 Cedar St	San Francisco	CA	94101
69	Samuel Yellow	6666 Birch St	Fort Worth	TX	76101
70	Tina Purple	6767 Willow St	San Jose	CA	95101
71	Umar Orange	6868 Ash St	San Antonio	TX	78101
72	Vanessa Pink	6969 Dogwood St	San Diego	CA	92101
73	Walter Grey	7070 Sycamore St	Dallas	TX	75201
74	Xavier White	7171 Redwood St	San Jose	CA	95101
75	Yara Black	7272 Cypress St	San Antonio	TX	78101
76	Zoe Green	7373 Juniper St	San Diego	CA	92101
77	Adam Blue	7474 Fir St	Dallas	TX	75201
78	Bella Yellow	7575 Hemlock St	San Jose	CA	95101
79	Carl Purple	7676 Spruce St	Austin	TX	78701
80	Diana Orange	7777 Cedar St	San Francisco	CA	94101
81	Ethan Pink	7878 Birch St	Fort Worth	TX	76101
82	Fiona Grey	7979 Willow St	San Jose	CA	95101
83	Gavin White	8080 Ash St	San Antonio	TX	78101
84	Helen Black	8181 Dogwood St	San Diego	CA	92101
85	Ian Green	8282 Sycamore St	Dallas	TX	75201
86	Jessica Blue	8383 Redwood St	San Jose	CA	95101
87	Kyle Yellow	8484 Cypress St	San Antonio	TX	78101
88	Laura Purple	8585 Juniper St	San Diego	CA	92101
89	Leo Orange	8686 Fir St	Dallas	TX	75201
90	Mia Pink	8787 Hemlock St	San Jose	CA	95101
91	Nathan Grey	8888 Spruce St	Austin	TX	78701
92	Olivia White	8989 Cedar St	San Francisco	CA	94101
93	Peter Black	9090 Birch St	Fort Worth	TX	76101
94	Quinn Green	9191 Willow St	San Jose	CA	95101
95	Rachel Blue	9292 Ash St	San Antonio	TX	78101
96	Samuel Yellow	9393 Dogwood St	San Diego	CA	92101
97	Tina Purple	9494 Sycamore St	Dallas	TX	75201
98	Umar Orange	9595 Redwood St	San Jose	CA	95101
99	Vanessa Pink	9696 Cypress St	San Antonio	TX	78101
100	Walter Grey	9797 Juniper St	San Diego	CA	92101



महाभारत के इस भाग को जाननी है ।

इस भाग में महाभारत के अन्तर्गत की जाननी है ॥

यों ही सब महाभारत को जान लेंगी ।

महाभारत के अन्तर्गत की जाननी है ।

महाभारत के अन्तर्गत की जाननी है ।

श्रीमद्-महाभारत के अन्तर्गत की जाननी है ।

महाभारत के अन्तर्गत की जाननी है ।

इस भाग में महाभारत के अन्तर्गत की जाननी है ।

यों ही सब महाभारत को जान लेंगी ।

महाभारत के अन्तर्गत की जाननी है ।

इस भाग में महाभारत के अन्तर्गत की जाननी है ।

यों ही सब महाभारत को जान लेंगी ।

महाभारत के अन्तर्गत की जाननी है ।

महाभारत के अन्तर्गत की जाननी है ।





मिलत-यह उभीसो पेंसठ रत्नपुरी मांठी  
महागज-हीयलाल आनन्दे मायाजी ॥ जियाः५५॥



॥ एलमी पुप बखि ॥ नारणी-वाल-हृदकी ॥  
या पूर जन्मधी भीति भीति या देहो ।  
महागज मोर धर्म नांग श्यामोली ।  
धनदध मेरवी पुन नरवोको देस लज्जावोलीका ॥  
इन बहे केवली पुनयो मे सम्झावे ।  
महागज श्रीम कथाहं नारीली ।  
नय नारी नरके मेन मानयो बरी रमाहीली ॥  
यह धीरु बहूत मरी बने मोर की नानी ।  
महागज मोर नर नरके श्यामोली ।  
इन सुकीकी कथाहं पुन मे सम्झ नारीली ॥  
नय नारी नरके मेन मानयो बरी रमाहीली ॥  
महागज श्रीम कथाहं नारीली ।



महाराज त्रियासे जग भरमायाजी ॥धनदत्त॥३॥

एक सुनिराज महाराज गौपरी आया ।

महाराज नटयो नजरत पडिषाजी ।

धन्यरुघुनि संसार स्थान फिर पार उत्तरियाजी ॥

यो भारं भादनां बसोका सुन्द उहाया ।

महाराज ज्ञान वेदल पद साधार्जी ।

यह राजादिक सब लोक ज्ञान सुन पणा सुलटायाजी ॥

यो नमपण्डो महाराज विश्वदिना ।

महाराज जराहन्त्राजी पदार्थनाजी ।

यो हो भाग यो बरदान यो सुनयेत जनसाजी ॥

यह जनासो वेसा नमपणे होरी ।

महाराज हीमराज यह जग साधार्जी ॥धनदत्त॥

। १९५ ॥ ३३ ॥ १९५ ॥ ३३ ॥

१९५ ॥ ३३ ॥ १९५ ॥ ३३ ॥ १९५ ॥ ३३ ॥



कर्माश्मयता गेहजगभमता जि सो भां ह वा भा र को र ह नो ५  
 सुण ड व दे श म य ज ग द् वारी भा त पि ता के न न म ले ज्यो त धा ॥  
 को ही ग ल्या ल स र म हा इ ज थो । हा चो सं ध मि ल्यो तु व  
 जे र नो ॥ क्क म य ७ ७ १

॥ सु र्वा न मो द । व र लो मि वे धि वा र्णो क म लार वी - सु र्वा र्णो ॥  
 सो न लो से श । सो न व ज ग यो ग यो म्हा दि । सो न  
 सो नो सो ए क स र म हा इ । जो नो नो ज ग यो न  
 मे नो ज ग यो वी नो ज ग यो नो वी नो सं स र ॥  
 सं स र म हा इ ज ग यो नो सो न व ज ग यो नो सं स र ॥  
 सो न लो ज ग यो नो सो न व ज ग यो नो सो न  
 सो नो सो न म्हा इ ज ग यो नो । सो नो नो नो नो नो  
 सो न लो ज ग यो नो सो न व ज ग यो नो सो न  
 सो न लो ज ग यो नो सो न व ज ग यो नो सो न  
 सो न लो ज ग यो नो सो न व ज ग यो नो सो न



॥ अधरवरणोपा सर्वथा ३९ ॥

अभिहित ध्यानधर ज्ञानदा उद्योत कर ।

संतार सागर तर ऐसीकरी वरनी ॥

गुरोः परण दिन शिविषे हरण निज ।

साधन मर्या गति यह गीत वरनी ॥

दानदया सात्व र्शाल दुर्गतिको हर डेज ।

सुखलको सलगेरुदय दुख्य हग्नी ॥

अंतःकरण सेवी शिविषेको नदिजनी ।

दीनतात करे भित्त गतेकी निमग्नी ॥ १ ॥

सुनोरो सुख ना सुखानी शिविषे ॥

जागनकी हर कर सुख दिन गगने ॥

दि लीसे सुख्य नहि दिजेके सुख्य मंग ।

साधनेको यह ना निज सुख साधने ॥

अ ३९ ॥ ३९ ॥ ३९ ॥ ३९ ॥ ३९ ॥

॥ ३९ ॥ ३९ ॥ ३९ ॥ ३९ ॥ ३९ ॥





अतोनिश तरण लेत पीगामी घटाई है ॥  
 ऐसा है दयाल दाता करि है अनंत भाला ।  
 हीगलाल कहे ज्ञाता एरु एण भाई है ॥१॥  
 देखो इस जगत्को सुठरी रचोते लाल ।  
 सांभसे न जाले बाल जगत संसारो है ॥  
 सुहा जो बलोक देत निरकहे लाल रहित ।  
 सुष्टेती करे हेत नरक अधिकारी है ॥  
 सांभसे न जाई लीज हां कपहा गो मार ।  
 मन मरियो बौद्ध बगन जगारी है ॥  
 सुगुण सुभाष नर सुलहि लाल कं  
 हीगलाल कहे मलक सुय भाई है ॥२॥



दक्षिणे तपेभु त्पणं रूपं कते नीलवन्तर ।

परावत शृङ्गारमे अश्वत्तर वीणिये ॥ १ ॥

शोरदामे निम्न मुये नारागांनहि धरणीदते ।

नीरुन शंकर मारी वेष्टुदेर लामे ॥

कन्य मारी मत्त वीण मन्मने सुधमी लीला ।

निधिमिं लरुवदीनी ज्ञा मन्मनिधनानां दे ॥

मंगामे विरुवदिमिं शान्ताने मन्मने वीण ।

वन्मनिधन मन्मने अति मन्मनिधन ॥

मन्मने मन्मनिधन मन्मने मन्मने मन्मने

मन्मने मन्मने मन्मने मन्मने मन्मने

मन्मने मन्मने मन्मने मन्मने मन्मने



चरनपूल सितपूल हुल्लहि तिलहि सुख ।  
 हीगलाल कहे शीत रिन नानी नानी हे ॥१॥  
 इतर जोण अंग नही जावे स्व मंग ।  
 नाशमेव नमजावे गल्लमेव काम हे ॥  
 गेपाणे नही हे जेण नारायण कहे लोग ।  
 लाज काज लिसा घट वे दखल हे ॥  
 अशुद्धी दिना अशुद्ध नही जे हे वेद ।  
 काय शंभु शम्भुन मनी मंगल हे ॥  
 सीतले सीतलें दयासे जोरलें ।  
 हीगलाल को अरुण लिलेन मंग हे ॥२॥

अन्त इतर मंगल सुखी मनी ॥  
 मंगल मंगल मंगल मंगल मंगल हे ॥  
 मंगल मंगल मंगल मंगल मंगल हे ॥  
 मंगल मंगल मंगल मंगल मंगल हे ॥  
 मंगल मंगल मंगल मंगल मंगल हे ॥



धन माल लहे पर घोर चाला निज घर ।  
 रहे हीमलाल सोतो गया धनी घरे ॥  
 जायुं न करयो घोर नाह लहे मनो ।  
 एते जायुं पने सोतो कामे रहे धरो ॥ ८ ॥  
 मे सो घनो उदरेण दियो पनी करे न्ये ।  
 धने जो न लागे धार करमायो मनो ॥  
 धर्मही जायुं हीन जगही मज्जा भेज ।  
 सोतो लज बात करी नायो न करे हे ।  
 सो जो न जायुं जायुं मनोही नयो न्ये ।  
 हीमलाल दोर नारी धरो धरो न्ये हे ॥  
 जेन ह्यन दय होतो सोतो जायुं जायुं न्ये ।  
 धरो न्ये न्ये जायुं धरो धरो न्ये हे ॥ ९ ॥  
 धन धन ह्यन धन धन धन धन धन  
 धन धन धन धन धन धन धन धन





॥ सर्वथा श ॥

आदिर्दामे वीररत्न दान दिया होवे जन्म ।  
 तपरदा करिशां सुखस्त करे कोरु तनयो ॥  
 निशंभ धर्म धीर होवे महा सुखीर ।  
 राज पद त्याग गत धोरजेके जनको ॥  
 काम क्रोध मोह शीत शत्रु मोच्य लिया जीत ।  
 येरि को विनासे कहां धोर वीर बनको ॥  
 दीगलाल कहे महा वीर मिले नाम सह ।  
 पानिक करम क्षय कोषावहावनरो ॥ १ ॥  
 बीलो हे शंभार गग लज्जनाके होतरक ।  
 बिलोय बिलोह नीला गति सुख लोपिदे ॥  
 कांस्य मोत्याको हार नरा = निम्नतर ।  
 लज्ज न लज्ज भूम न पारिह आदिदे ॥  
 निम्न = लज्ज नरा लज्ज न लज्ज न ।  
 नरा लज्ज न लज्ज न लज्ज न लज्ज न ।





धन जो बेरागीजन जानलियो एहवो तन ।  
 धरियो बेरागे मन जिम जल नावहै ॥  
 संजमको सारजो संसारको उतारे पार ।  
 हीरालाल कहे योही तीरणको दावहै ॥ ६ ॥  
 हँसरस उपजत हँसकी वस्तुको देख्यां ।  
 विप्रीत वचन सुण्या आवे हँसरसहै ॥  
 पुरुष स्त्रीनो रूप बालब्रध तरुणीको ।  
 अन्यदेस भाखारिगे दइहड हँसहै ॥  
 सुता देवरके मुख मोभाइ मंडण कियो ।  
 जाग्रत भयासे नार हीहीकार हिस है ॥  
 इमहे अनेक उदारण हँसरस काज ।  
 हीरालाल कहे मुनी मोन भाव बस है ॥ ७ ॥  
 कलुणिरसकी उत्तपती है वियोग संग ।  
 नार भग्नार पुत्रादिक व्याधि वयाणा ॥  
 शत्रुभय मन जार्णा मकल्य विकल्य आनी ।

आक्रंदादि शब्दनीर झरे जेके नयणा ॥  
 जिम कोई नारके भरतारको वियोग भयो ।  
 अन्यके आगल मांड कहे निज दहेणा ॥  
 हीरालाल कहे सुख भोग हे संतोष जोग ।  
 जैनधर्म पाया रोग मिटे करो जयणा ॥ ८ ॥  
 क्रोधादिक उपशांत होत है प्रशांतरस ।  
 विषय कषाय हिंसा दोषसे नीव्रतियां ॥  
 कोइक पुरुष मुनीराजको देखीने कहे ।  
 सोमद्रष्टी निर्विकार सोवे साधु जतियां ॥  
 शशी जूं सीतल मुख उपसम रस युक्त ।  
 इम गुण करी जुक्त साधु वा कोइ सतीयां ॥  
 हीरालाल इम कहे अनुयोग द्वार लहे ।  
 ताकोही आधार नाम कथनामे कथीया ॥ ९ ॥



जयसेन<sup>३३</sup> हरीसेन<sup>३४</sup> जयपेण<sup>३५</sup> लाइये ॥

जगमाल<sup>३६</sup> देवरिख<sup>३७</sup> भीमरिख<sup>३८</sup> कर्मरिख<sup>३९</sup> ।

राजरिख<sup>४०</sup> देवसेन<sup>४१</sup> संकरसेन<sup>४२</sup> धाईये ॥

लक्ष्मिलाभ<sup>४३</sup> रामरिख<sup>४४</sup> पद्मसुरी<sup>४५</sup> पेटालीस ।

हरीसेन<sup>४६</sup> कूसलदत्त<sup>४७</sup> उवाणिरिख<sup>४८</sup> ठाईये ॥ २ ॥

जयसेण<sup>४९</sup> विजेरिख<sup>५०</sup> देवसेन<sup>५१</sup> सुरसेन<sup>५२</sup> ।

महासुरसेनस्वामी<sup>५३</sup> महासेन<sup>५४</sup> धारी है ॥

जयराज<sup>५५</sup> गजसेन<sup>५६</sup> मीश्रसेन<sup>५७</sup> विजेसिंह ।

शिवराज<sup>५८</sup> लालजीने<sup>५९</sup> ज्ञानजीरिख<sup>६०</sup> भारी है ॥

भाणोजी<sup>६१</sup> रूपजीरिख<sup>६२</sup> विजेराज<sup>६३</sup> तेजरिख<sup>६४</sup> ।

कुवरजीस्वामीके<sup>६५</sup> पीछे हरिजी<sup>६६</sup> विचारी है ॥





॥ वारा भावनाका वर्णव ॥ सर्वैया ३१ ॥

अ<sup>१</sup>नित्य अ<sup>२</sup>सरण सं<sup>३</sup>सारने एक<sup>४</sup>ंतभाव ।

पं<sup>५</sup>खि पत पंच<sup>६</sup>मिया भावो<sup>७</sup>नित्य भावना ॥

अ<sup>८</sup>शुचिने आ<sup>९</sup>श्रव सं<sup>१०</sup>वर निर्<sup>११</sup>जरा जाण ।

ध<sup>१२</sup>र्म भावना चित ध<sup>१३</sup>रमको लावना ॥

लो<sup>१४</sup>गा लो<sup>१५</sup>ग एक<sup>१६</sup>दश बो<sup>१७</sup>ध दु<sup>१८</sup>हा द्वा<sup>१९</sup>दश ।

ज<sup>२०</sup>नम म<sup>२१</sup>रण मा<sup>२२</sup>हीं फे<sup>२३</sup>र नही आवना ॥

ही<sup>२४</sup>रालाल कहे भ<sup>२५</sup>व्य भा<sup>२६</sup>वेरे भा<sup>२७</sup>वना नित ।

क<sup>२८</sup>र्म ख<sup>२९</sup>पाइ हित सु<sup>३०</sup>गतिको पावना ॥ २ ॥

सु<sup>३१</sup>नोहो च<sup>३२</sup>तुर नर दु<sup>३३</sup>वादश चित धर ।

भा<sup>३४</sup>खी श्री जि<sup>३५</sup>नवर ता<sup>३६</sup>की ए<sup>३७</sup>ह रीत है ॥

प्र<sup>३८</sup>थम अ<sup>३९</sup>नित्य तन ध<sup>४०</sup>नने जो<sup>४१</sup>वन पन ।

का<sup>४२</sup>रमो कु<sup>४३</sup>टंभ कि<sup>४४</sup>म की<sup>४५</sup>जे तहां प्रि<sup>४६</sup>न है ॥



ऊंच नीच भयो जैसे चपलाको चलको ॥  
 बाप मरि पुत्र भयो पुत्रको पुत्र धयो ।  
 उल्ट पुल्ट जैसे नाटकको खलको ॥  
 हीरालाल कहे लीनो संजमसु शालिभद्र ।  
 व्रत त्यागन कियो नासिकासो मलको ॥ ४ ॥  
 एकंतभावना एका एकीहैं चेतन मेरो ।  
 कोइ नहीं तेरो देख ज्ञान चित धरणी ॥  
 आवताहि एकाएकी जावत हे एकाएकी ।  
 आगम गमन सो तो करमाको करनो ॥  
 जापही संचित कर्म भोगत हे जायो जारी ।  
 सुख दुःख निजकृत जापको लक्षरणी ॥  
 कहे हीरालाल नमिगज भये अरिगज ।  
 एकंत विगजीकाज संजमको सरणी ॥ ५ ॥  
 जैसे निश बानकाज पंदि तरु ग्या गज ।  
 तेसो परिवार मिल्यो जइकहु भान हे ॥



आवत करम संच जासे भारी होत है ॥  
 मिथ्यात्व अव्रत प्रमादने कषाय करी ।  
 अशुभ अधवसाय करमाको सोत है ॥  
 हिंसाझूठ आदि विस बोल कहा आश्रव ।  
 ताको जो परहरे कर्म मल्लघोत है ॥  
 कहे हीरालाल ऐसी समुद्रपाल महा ऋषि ।  
 भाइ हे भावना जैसी पाया धर्म जोतहै ॥ ८ ॥  
 समकित आदि बीस बोलको सुलट किया ।  
 संवर कोठाम जीयां कर्मकोन्यावहै ॥  
 रोकदियो आश्रव संमर भावना कर ।  
 पाप सब परहर संबुडा केवावे है ॥  
 जैसे नीरनाव मार्हीं रोकदियो आवेताही ।  
 जैसे वासुदेव दल अरिको नसावे है ॥  
 हीरालाल कहे केशि मुनि बंधा सुख लहे ।



आलोइ निंदीयकर गया खेवापार है ॥  
 पैंतीस वर्ष लग पाल्यो है संजम भार ।  
 बहोतर वर्ष सब आयुष्य विचार है ॥  
 कहे हिरालाल घणो कियो उपगार जाण ।  
 शिष्यको भणायो ज्ञान ध्यानका भंडार है ॥ २ ॥

॥ उपदेशी छप्पय छंद ॥

कियो रूप नरसिंह, द्वास्के मुले आयो ।  
 महितल मारी लात, नादे अंमर गजायो ॥  
 धरणी भइ धडधडाट, थरहर धूजण लागी ।  
 गढमढ मंदिर कोट, घडडड पडिया भागी ॥  
 देख अतुल्य बल खलबल्यो, मन विचार इमडो किय  
 हीरालाल कहे नृपपद्मने, सरण सतिकोजायनियं ॥  
 फिरे नंदीको पुर, फिरे सुरो रण चडियो ।  
 फिरे मघ पहल, फिरे गजमदको जडियो ॥





हीरालाल कहे रस वचनको, बुद्धिवंत नर पीजिये.४  
 अधिक मात ओर तात, अधिक सुत नार स्नेही ।  
 अधिक वंधु परिवार, अधिक सजन जन केही ॥  
 अधिक राजको ठाट, पाट पितांमवर गहना ।  
 अधिक माल रसाल, अधिक सुख अमृत वयना ॥  
 अधिक पद भूपत भयो, अधिक रूप रमणी गणो ।  
 हीरालाल कहे इस जक्तमें, अधिक धर्म जिनवर तणो.५  
 अधिक ज्ञान गुण ध्यान, अधिक तप संजम सूर।  
 अधिक सील संतोष, अधिक प्राक्रम पूरा ॥  
 अधिक दया उपदेश, अधिक सुख अमृत वाणी ।  
 अधिक कियो उपगार, अधिक जीव यतना जाणी ॥  
 अधिक धिरज धग्णी धरा, अधिक तेजदिवाकर जसो ।  
 हीरालाल कहे मुनीगजको, अधिक शीतल चंदा असो ६

॥ इति संपूर्णम् ॥



... ..  
 ... ..  
 ... ..  
 ... ..  
 ... ..  
 ... ..  
 ... ..  
 ... ..  
 ... ..  
 ... ..  
 ... ..  
 ... ..

। कालिका दर्शन-पुस्तक ।

कालिका महादेवी सुंदर लाल कृष्ण प्रकाशक-द्वारा  
 भला क्या क्या हुकूम पढ़ने हैं । कालिकादर्शन  
 देशदेशके धार्मिक भाव ... ..





भला; उनका ॥ कान्कंस ॥ १ ॥

प्रातिक प्रांतिक; भेज उपदेशक। जयविजय करावती  
हेरे ॥ भला; जय ॥ कान्कंस ॥ २ ॥

कृकृ गिवाज आज तक केद। उनको दूर दृगवती हेरे ॥

भला; उनको ॥ कान्कंस ॥ ३ ॥

मपर्नाकर्ना। विपनीकी हग्नीधर्मीको राजदिलावती हेरे

भला, धर्मी ॥ कान्कंस ॥ ४ ॥

जीव दयाका प्रबंध र्चावत। सभ संघसे भक्ति

बदावती हेरे ॥ भला सब कान्कंस ॥ ५ ॥

कान्कंस कानून बनावत। लोकिक सुधार करावती हेरे

भला, लोकिक ॥ कान्कंस ॥ ६ ॥

पुण्य श्री लालजी गुरु जवाहर लालजी, 'हीरालाल

सुमती युगावती हेरे ॥ भला हीरालाल ॥ कान्कंस ॥ ७ ॥

॥ इति श्री जैन सुबोध रत्नावली समाप्त ॥



























































at 22511412

5121512

i. kopfungs yadabuwak.

Wolke Bayer

Rajkot

॥ श्री ॥

## छत्रीश बोल संग्रह

अने श्राविकाने, अवश्य उपयोगी जाणीवाताने स्वचे यणीज रीते संशोधन  
(श्रीम) आशयः सारु तैयार कृती छपाची प्रगिद्ध करतार,

द प्रेरुदान शेठिया. मुं. विकानेर.

१०००.

संख्या १९९२, मने १२१६

५७

2013  
2013-14

2013-14

2013-14

Yashwantrao Chavan  
Bhatkar Bazar  
Rajkot





॥ श्री ॥

# ॥ छत्रीश बोल संग्रह ॥

महाराजगढ़ी, मारवाड़ी, भावक और आदिवासी, अथवा अग्रणी संजीवमानों एवं प्रणीत की भाँति  
मराठी भाषा ( कवीग ) भाषा भाषा भाषा की आनी प्रगति भाषा,  
अगरचंद नरद्वान डोनीया.

गु. विकानेर.

क्रिस्ताल मद्रप्रांश ( भण्डन.)

Sethia Jain Library  
BIKANER  
Serial No. १११  
Index No. १११

LIBRARY BIKANER

१११







21.05.2018

21.05.2018

Dr. Manoj Kumar

Block Bayar

Rajkot

VEDANGSALAYA BHARATODAYA SETHIA

Sethia Jain Library  
BIKANER  
Serial NO. ६६४  
Index NO. ७४४

# ॥ छत्रीश बोल संग्रह ॥

॥ श्री ॥

संस्कृत गाथुजी, गाथर्वजी, आरक अने आधिकारणे, अथर्व उपयोगी जोणीयांवाले सर्वे नवीन रीते संगीत करुनी गहन ( वधीय ) आरक सारु वेवाक कमी उपाती प्रसिद्ध करुनार,  
दयामावृत्ति-वत १९०९

द्वारचंद प्रेरुदान शेठीया.

मु. विकानेर.

किम्मत सहस्रपयोग ( अमूल्य. )  
मंथन १९१० मने १९१६



अभिज्ञानशाकुन्तलम्

अ. १. दृश्यम्

अभिज्ञानशाकुन्तलम्

कालिका

राजकोट



21.05.2011

विश्वविद्यालय

विश्वविद्यालय, मुंबई

ब्लॉक 5

पत्रिका

Sethia Jain Library  
BIKANER

Serial No. ६६५

Index No. १५५५

॥ श्री ॥

## ॥ छत्रीश बोल संग्रह ॥

समन साधुजी, साधुदेवी, श्रावक अने श्राविकांचे, अवश्य उपयोगी ज्ञापीपात्रांचे सर्वे सजीव रंगे संगोपन करायची महत्त्व ( वक्षीय ) आवया साकू नैवार करी लयाची प्रगिद्ध करणार,

द्वारचंद ज्ञेख्यान शेठिया. मु. विकानेर.

प्रथमावृत्ति-या १०००.

मंगल १९३२ मस १९३६

हिममन सधुपयोग ( अमूल्य. )

21.11.1951

21.11.1951

21.11.1951

21.11.1951

21.11.1951







Sothia Jain Library  
BIKANER  
Serial No. 65  
Index No. 71

॥ श्री ॥

# ॥ छत्रीश बोल संग्रह ॥

गमन माधुजी, माधुजी, शालू वने श्रविकांत, पादय अयोजी जंजीवांताने सर्वे गरीज किंसे सगोत्र  
करानी पकल ( वधीग ) आणक, साक जेपाक कमी अयावी पगिद्र करणा,

अगरचंद बेरुदान शेठीया. मु. विकानेर.

प्रकाशनालय १९२२

मंज १९२२ पंत १९२६

क्रिमत संपुषयोग ( अमूल्य. )

